

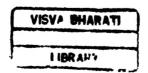


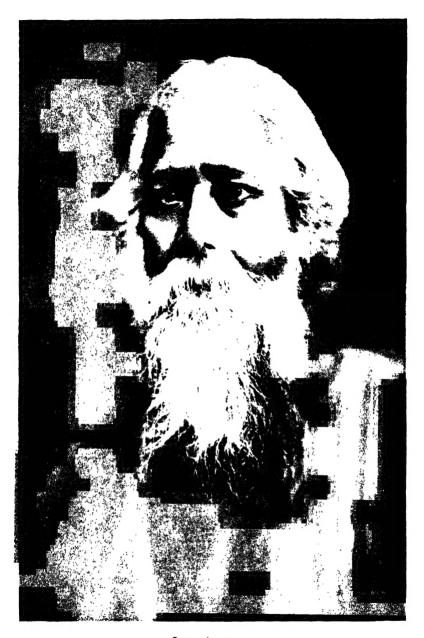
VISVA-BHARATI LIBRARY



PRESENTED BY

У. В.	Publishing dept
	•





রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর। ১৯২৬ শান্তিনিকেতন আশ্রমিক সংঘের সৌজতে

Samon Samon

2015 Jan 2015 Mag

VI RHARATI 212864 IIBRAHI

किय म्या (म ॥ कार्य म्याय क्राय क्राय श्रित्र क्राय क्राय

ध्रुम ज्रूपक (म. १) ज्रूपम्य क्रूपक्त क्रूपक्त ज्रूपक्त क्रूपक्त ज्रूपक्त क्रूपक्त ज्रूपके क्रूपक्त ज्ञूपक्त ज्ञूपक्ति ज्ञूपक्त भवेद हमारे।। प्राचनमार्थ मुम्मिक होते। स्ट्रिक करके रुपश्ची सम्बद्धिक क्रिकी में सम्बद्धिक क्रिकी ।

रुक खर्म उम्मार्ड ॥ प्राप्त क्रमार्थ केम्प्रे प्रम्म मम्मिर्डाम् भाग मम्मिर्डाम् श्रुष्ठे श्रुष्ट क्रम्म् स्मार्टे। प्रक्रम भक्षम भाग स्ट्रम्स क्ष्ममा क्षमा क्षमा क्ष्ममा क्षममा क्ष्ममा क्ष्ममा

भिष्य स्ट्रीस्टिंस्स्य अग्रह्म स्ट्रीस्ट्र ॥ स्ट्रिंस्य, हृष्ट्रिक न्यस्ट्र, पंत्र अस्ति अस्त्र भारत्यात्त्रक अनुष्यः । भारत्यात्त्रक अनुष्यः । शर्मेश् महित्यं, स्त्रित्यं क्रिये क्रिये स्ट्रिंस्य

> अक्ष (की क्रक्र)। क्रिया मैंड का अक्षेत्र आक्षा डेट्य स्थार्थ शास क्रिया शास रेपाएं का क्रिया के के क्षेत्र के

अभाग अभी कमावा में अभाग अभी कमावा में अभाग अभाग अभाग अभाग काराम क्रम अभाग अभाग कार अभाग अभाग अभाग भाग अभाग अभाग अभाग में अभाग अभाग अभाग । अभाग अभाग अभाग ।

इस्तर ज्य स्थित द्रांग्य देश भक्त क्रांस संस्था क्रांस भक्त भाग अभाग क्रांस भक्त क्रांस क्रांस भवत क्रांस भवत क्रांस भवत क्रांस भवत क्रांस भवत क्र अभावर मेरी भगाव भाष्ट्रास्त्र । अभावर असे अस्त्र अस्त्र भावर अभावर असे अस्त्री अस्त्र भावर क्रिस्ट

स्थान प्रक्र स्थान क्रांस हेक । स्थान क्रांस स्थान क्रांस हेक स्थान क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस हेक स्थान क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस हेक स्थान क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस हेक स्थान क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस हेक स्थान क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस हेक स्थान क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस हेक स्थान क्रांस क्रा भूषे (प्राप्त में महार क्रिक्स क्रिक्

भाकत भुमेरत, "क क्रिला, अभावा भवता प्राम्य ।" क्राकी प्रत्यून अभावि, भावा अलादून भगवीह, भूमेरत जवामुनि शामिक,

रकार्जी राजकाई क्राविकार, १००० दार कर कार क्रानिकार। प्यार क्रमार क्

सिन्नि अभिक्त भवत्व भवत्व भव भागाय- ज्या (अभागा भागा अत्या अव्याव क्राय्य (अभागा आर्थाय व्याव क्राय्य अवत्य अवत्य अवत्य क्राय्य अवत्य अवत्य व्याव क्राय्य अवत्य अवत्य व्याव क्राय्य अवत्य अवत्य क्राय्य अवत्य अवत्य

MART SAVAY AMEON 1 FIR DIME GIME A लाने किया गिरिता, gar are harren मिर्मिट भार में र्रा लाइ भेष धार गाड प्रस्म, अभाषाल प्रिंग अभिराप mor was simmand of every some some of किविद्या विक्रीय गराव अराह काई प्रश्न की। (अ कियार भाउ ए मिं। क्रिक स्ट्रिय कार्य and great the singer, अवदाय भार अभिताभ अस थाउँ याद याद ।। क्षा क्षाक हातर हिन

& NOT ELON LOON WELL the parter alos madonia MAYAT WANTER DAY DOMENT SOT, MASIAL POT THE SURE DEM They swells and sports अभी एक, योक पार्ड, or or annow wer १ मीम भाराम विद्युक्त भारति ।। AR ON GIR THEN ELT ON BY BYTH, RULL IN DI THEN STAN WAR 3 CET 1 ज्ञेरावर अर्थ अर्थित लाख्य प्रती, लिखारिय दिलें अलापन मिल भाग करिय एराम खाउरास प्राय भारत । करून अर्थेशिम्पर्न 188 JUNEN INCOI OR FIVE 11

 स्मार के प्रमार क्रिक्ट करते। भूके १९४५ श्राम क्रिक्ट अस्ति अ

अर्थन कामन मीठ उन्हरी मित्र कि तन्त्र उन्न मित्र मुक्त न्त्री आगण्य घरण राम्म न्यून रामाण्य घरण राम्म न्यून रामाण्य घरण राम्म न्यून रामाण्य घरण राम्म न्यून रामाण्य घरण रामाण्य प्रमुक्त ॥ केंग्राय द्रार अन्य उत्, (अभ्याय द्रार मुख्य द्रार । प्रकार प्रत्य मुख्य द्रार । प्रयायवीड गरहर ड्रार गूड्रा द्रार गराज ड्रार प्रदूष रूड्डा प्रकार प्रता, प्रदूष रूड्डा प्रकार प्रकार प्रता के (ए प्रदूष-करहर ।

मिन केरी प्रस्त कार्य हता। कार्य कार्य केरण कार्य कार्य कार्य केरण कार्य कीर्य कार्य केरण कार्य कीर्य कार्य कार्य कार्य कीर्य कार्य कार्य कार्य कीर्य कार्य ॥ तिस अरहा अर्थन तिस्य प्रिएक्सि इति, अर्थनि अर्थन अर्थन तिस्य अर्थन्ति अर्थन अर्थनिक अर्थनित्व श्वास प्रिएश्न क्रिएश् अर्थनिक अर्थनित्व श्वास प्रिएश्न क्रिएश्न तीर अर्थनित श्विम अर्थनित्व कर्थिः १र४म्बर्भ प्रिए अर्थनित्व कर्थः

अभ्यान के साथ अभयने स्था देखें , अभ्यान प्रसाद प्रमाय अभियं क्ष्य के स्था के रि अपने कर्त कर्त प्रमान विकार भव क्षेत्र कर्त नह क्षेत्र । अपने हिराएक क्षेत्रपुक अपने प्रमान अपने हिराएक क्षेत्रपुक अपने प्रमान अपने क्ष्मिक अपने अपने प्रमान । अपने क्ष्मिक अपने अपने अपने । अपने क्ष्मिक अपने अपने अपने । अपने क्ष्मिक अपने अपने । अपने क्ष्मिक अपने अपने । अपने क्ष्मिक कर्ते ।

अगह हमएर अख) तम्मर्य हम (भागत (भागत अग्नेस अस्स रख। अग्नेस अस्स अस्म। अस्स अस्ट वर्ष अस्सि।

अभित्र स्ट्रिस क्रिया केर्या म्यास स्ट्रिस स्

उत्पाद करी महारह करते।

क्रिया राष्ट्र कराहे

क्रिया राष्ट्र कराहे।

अभि भामम द्वार हुए हास॥ विस्तु प्रायम कारम्य कारम् विस्तु क्षायम् क्षम्भार्य विस्तु क्षायम् विस्तु क्षायम् क्षम्भारम् विस्तु क्षायम् क्षम्भारम् विस्तु क्षायम् क्षम्भारम् र्म के अभिन क्षित्र क्ष्मित्र क्ष्म

 son some tok over . BELLA SUSTERIAL Mr (BM Mr (B) EN NON) were here but sun. भारता क्षेत्र क्षेत्र भारत किय प्राणाला क्राम, मुद्री मिहार क्षेत्रभाग्रीका see some त्रं खमा राम, खाँ हम अंगा। भावन भार भार (यावार्ड मुद्र भारत कार कार कार कार कार कार IN WING ENMANDE, (A MAR JA) CHE DITH CH CHEN, WAT मूह नीय क्या । इर्त ए क्या अभीय अभाग अग्री- अभाग भीय । IN COUL IN BUY EN AUN II

३००८ शरणवं च्या ॥ त्रिक्त क्षेत्रक क्ष्यं क्ष्यं क्षेत्रक क्ष्यं क्ष्यं क्षेत्रक क्षेत्यक क्षेत्रक क्षे

क्षतंत्र त्रेयम्य । पराकं अस्य क्राज्य र्रायं इत्रकेराकं टिंग्यमी उप्पर शएंड च्या]॥ एक्ट्रम् श्रेम् म्यूड हुद्ध क्युम् म्यूड हुद्ध प्राथ्न श्रेष्ट प्रयाच मुद्दार प्रयाच मुद्दारम् अरंग म्यूयाचे श्यामध्यास

266 C

अर्थ क्रियात का अर्थ प्राप्त कार्य कार्य क्रिया कार्य कार्य कार्य क्रियात कार्य कार्य क्रिया कार्य कार्य क्रियात कार्य कार्य कार्य कार्य क्रिय कार्य कार्य कार्य कार्य क्रिय कार्य कार्य कार्य कार्य क्रिय कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य क्रिय कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य क्रिय कार्य कार्

अप्राहे अप्रते शेक्स स्मात् अद्रे अभ्यत्य प्रमुच स्मा (क्राम्म (क्राम्म (क्राम्म) इस्म् (क्राम्म (क्राम्म (क्राम्म) (क्राम्म (क्राम्म (क्राम्म) (क्राम्म (क्राम्म (क्राम्म) (क्राम्म (क्राम्म) (क्राम्म (क्राम्म) (क्राम्म (क्राम्म) (क्राम्म (क्राम्म) (क्राम) (क् अपन स्प्रम मिन्न ।

अपन स्प्रम मिन्न भारतः

अपन स्प्रम स्प्रम मानी,

अपन स्प्रम स्प्रम स्प्रम ।

अपन स्प्रम स्प्रम स्प्रम ।

अपन स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम ।

अपन स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम ।

अपन स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम ।

अपन स्प्रम स्प्र

अर्थस स्पेश्रमं ॥
अर्थस स्पेशमं ।
अर्थस स्पेशमं स्थाप ।
अर्थस स्थाप स्थाप ।
अर्थस स्थाप ।
अर्थस स्थाप ।
अर्थस स्थाप ।

स्मित अपने सम्मित स्मित । अपने भागेर क्षित्र क्षित्र । अपने भागेर क्षित्र क्षित्र क्षित्र । अपने भागेर क्षित्र क्षित्र क्षित्र । अपने भागेर क्षित्र क्षित्र । मिन करह पण मिन, अभि क्य कारक, मान करहे असे मान करहे असे मान करहे असामा।

करहार क्या मान करहे असामा।

करहार क्या मान करहे असामा कराय ।

करहार क्या मान कराय कराय ।

करहार क्या मान कराय ।

कराय कराय मान कराय मान कराय मान कराय ।

कराय कराय मान कराय मान कराय मान कराय मान कराय ।

अप्राह्म (१ नेकी), उह ता कारण्य तमा आता। अप्राह्म अमार्ग्य क्रीन क्रीन नीन्य कारणा। अप्राह्म अप्राह्म क्रीन शिक्र श्रिमाण्य- निःश्वराय। वियव्य प्रक्रिय क्रीन शिक्र श्रिमाण्य- निःश्वराय। वियव्य प्रक्रिय क्रीन शिक्र श्रिमाण्य- निःश्वराय। व्याप्त अर्थक क्राम्य क्रीय्य क्राण्यिक। अर्थिक प्रक्रम निक्र अप्रत्य क्राण्यिक। अर्थिक प्रक्रमाण्या निव्यंत्र नेम्प्रदाय।।

किरम दिने, किरम कार्ते; त्रकार हेला है जिल्हा स्ट्राह्म स्ट्राह्म हैलार जक्रारहे ज्याराय, मीखर बेहे अस्तामी, न्रमुल भ्रम सम्बद्ध राष्ट्रमानिक ३८६। १८४५ १५४४ मार्च १५४४ मार्च १५४६ १

we sa pur gur,

can garbr 1

By was con the

राजा का कर मिल्हा सकी।

THAT & ABY PR,

रव्यपुरस्य क्षारा।

antique antique y sist romanie y 1 SUS DURNE MUK भारत राष्ट्र वेश्वर देश हैं ए आहे महार Spea tine Nex year अश्रमाता काराम हरक BE WELL DE 11 ess sucressor म् प्राची कित्या कार्य के के किया के क Ben musia remand read your Bar army 1 उत्पर्जाक क्षेत्र ।। उत्पर्जाक क्षेत्र क्ष्य उत्पर्जाक अळ्ये हात्र संबुंध किया ६ सम्मी सम्माउट मामाहे. ॥ दैं! पार्ट मांग. अस्म किया किया । स्वान् किया मांचे मेंग्य ईम्मा किया । मामाइक मांगा इमेड सम्मां एड्एमे । अभुम द्वां मुमा क्या के मांचे होसे । आपांच मुमा क्या के मांचे होसे । महाराच मुमा क्या क्या के सिंगामें।

क्रिमील में मए क्रम मक, ही अभन् ही ब्यून। (अ कि एस अ के अmon); की क्षान, की क्षाने। MAY AND WAY SUE मिली पार मिले भारी, Or Bar by stonders ्राधिक शिक्ष कथा क्रिक्मिन, मिक्ममे। esamera se mas as रे कि निर्देश हरेंगे, an war be marke ,,ग्राक्षर्राः भारत्याः, en en er van rie ल कि अस रिक रिक रेंग, ma Ferma? मिकमार, मिक्मारी।

भक्त भोक क्षेत्र क्षे

गूर्स क्ष्मिं स्ट्री ठ्राम्चे में मार्च ठ्राम्चे में मार्च ठ्राम्च मार्च ठ्राम्च मुख्य भागे । ठ्राम्च भागे मार्चि भित्र केर्सक गुड़ प्रस्केत्र प्रक्र मक्से म क्षेत्र क्षेत्रक म्हास्त भूति क्षेत्र क्षेत्रस्त स्तार क्षेत्रक क्षेत्रस्त स्तार क्षेत्रक क्षेत्रस्त क्षेत्र क्षेत्रस्त क्षेत्रक्षिय मुक्तेश्वर ।

रैंग्ये भी प्रम् क्ष्य ।। भारत (अम्पं अप्तं म्यु म्युवम् यातं म्यु म्युवम् यातं भूम भारतं ह्यांते म्युम् हाउवं भारत्। भूम भारवं स्थातं

 भारत साम्ह क्ष्मा साम्ह क्ष्मा क्ष्म

उपण्यादं स्था अध्यादि हिं S REBLIE ELEGANG मूल एम भारत अनुस्त कार Mars aress 1 धुकि म परि पर्य भाव भाव ज्ञाकाम त्या तर ड्रांस महत्व, यिष-श्री भारत कार निव आभ निक्क प्रकीरमे। BEN EN SUSTAT ENERS DISSES, SUBBULLE GENT ZEE 1 सर्व क्यान क्षीय क्रिक अग्रेड द्राष्ट्र क्रीड । And work and come year. : १६११८० विरिय हारहार अवरायाः प्रकार गर बिर्गेस, उत्परिक क्षेत्रीक AN 7462 WA 9211 क्षेत्र क्षि प्रक्ष प्रभाव भागवार्य ? क्षेत्र त्यात्मक भागवार्य ? क्षेत्र त्यात्मक श्रेट्रिंग, नम् स्थाप स्थाप, क्षेत्र त्यात्मक श्रेट्रिंग, नम् स्थाप स्थाप, क्षेत्र क्षेत्र अस्त्र अस्त्री,

प्राप्त क्षेत्र क्षेत्रक क्षेत्र

स्थित माम कार्य। स्थित माम स्थित काम्यावाड स्थित माम स्थित काम्यावाड अस्ट्रेस स्थित माम्यावाडा । भवराम्य हास माम्यावाडा

अक्राल अक्राल आक्रा, आराकेर, अक्राल अक्रा अक्रा । अक्रा अक्रा अक्रा आते, "अक्रा अक्रा नरश कुट्टा," अक्रा अक्रा करश कुट्टा

अवश्ये अस्ति अस्ति अस्ति। श्रम १५ स्टिम अरस्य श्रम १५ स्टिम अरस्य अस्ति १५ (अस्ति श्रम्ह) (अस्ति १५६ (अस्ति अस्ति) some some some THE OF BUY WHENN क्रान्यक्रम शिल गर्मरेका जार्ड, thousage planets we ! क्राम्य मार्ड ज्याह व्हिम्पा, अरब कुंग आक् करह दूरा। warne sis ve भाषा निर्ध करें भगाई (अपक अगर देशम्बर । २००० २००० द्रामार म्धिनुकार क्रांच्य । "भागीक <u>म</u>ुभूभी गार्व, JAMJAM KAJAMA भारपारकर अर्थे खर्मा । क्षियह खेळ अभि एक राम वैस एक रामिन। समितिक थ्राप्टिक रिक sowing over our भारतीर भारती वर करता।

द्रम्य अध्य केला, क्ष्म्य केला केला, क्ष्म्य केला, क प्रमाश्याक (प्रमा ।)

प्रमा प्रमा क्षात करके ।

प्रमा प्रमा क्षात करके करके ।

प्रमा प्रमा क्षात करके करके ।

प्रमा प्रमा क्षात में करके करके ।

प्रमा प्रमा क्षात करके करके ।

प्रमा करके करके ।

प्रम करके करके ।

प्रमा करके करके ।

— क्राय क्राय

र्भर भारत जमात्र कि My are sum was les men 1/2 man लाकाम डेल्भार war sure sure sure LILLE MENTER STATES mynnin da da । हारू प्रकार इस्लार्ट सम्मीक क्ष्युका। भीन अभी भी गरे क्षिक अवस्थित त्यात्र श्राम अप्रकार क्षात्र । भूतिक्षिण पूर्ण । उत्तर प्रकार क्षार Eus eus eus eus eus क्षुर्याप्तिय भारत भारत उठ्डा कार गर्म

The secon restruction with allow the time र्रेड अक्टूबर देश कार अर्था है। उर्देश कार अर्था है। every rever every source · Man GO SME '11 AND CHARGAR STEN USEN MOND TO SHOW IN MANDEN AND A SHOW IN THE REAL OF SHOWING THE SHOW IN THE SHOW IN THE SHOW IN THE SHOWING THE me refer time in मिल्र क्रिंग आवि निका MARAY APRASTREALI ign on h Lies Else Ru-voyalist The The ध्रुय अने हैं भि स्था भगाउ मिलाना रहेन कार्य मेंग्ये क्रिक न्यार क्रम्म हिल्ह

show the man show were MANUEL ANSWE WASH 1 selle Megyer MANA & MISTAT. SCH भारतीय जिल्ला करता, sur com str por MY. FRONTANI how man tude some ends per out saw? WAN ELLE SELENT विश्वतः तेमकार्य नवा राउं अवस हिंग SIE OF CHE SHIP!

क्लोम्पुर्त न्यार्व क्रिक कार्यारे देवस्यक

SYRED FORM STA भूमाड अनुस्व रमानेर जात हे किया SUBLUS SUMMENT न्त्रम राज्यात राज्य MACHE WAS FRIEN ountered to engly. MERCES CARANGELL त्याने पत्र स्टिन म्यान MB DW 8,12. OR (मेर्ट ब्रांस नर नर ति श्रेष्टि हिर्पात्रेण ने ने मिन फिल् मिनिक क्रियां हिम्मेर्डीक न्नारेखंड गि-मार्टे सुर्ध ASUSE SUNSUL PRINTE PERMIS NA IR DURNE SUMME SYDIE! THAT STANK MA BOS COM MANIME WAS INTHE

MITE 5 STACKEN, ANGON MANNER MICH GOMERS N MINHAS. GAMENS HYLANDO प्रमुक्ति केरे बाजा - LE ESTE BLANKS MAS (4 21 is burn har क्रिक्ट अक्रिस निवस्थि ४-मेर्स्ट १वटर ashe mulches LAND PHYSE COME COME SUCURIOR MA Course 235 Age Also mynni manie ग्वद्याद्यकं (ग-अप्रेर्स) परश्रावद थर Ch. 3 2 m Silving ARTEN TOWN WHAT प्रश्ने रेशका थरे कार्यक्रम संग्रेशन (वाकिस्ट मेर्डिट मेर्डिट)

405 3119, 43-CXMY, to wate our DALP HAM WAY विराधे देशव अनाम MURE SAM SAUS Comme was every -MIN ULT ENG BUD अंग्रेड हीसार धार भूष मार्ड जिए था हता. US. IN PENSE BY AM BERE RIGHT ROOM MATTER! गरीय डल्झार अभी ereco Ean and angels. wanter wildy CHEL YEN' MAN YELL AND MAY MAY FIN Tay Fin, Fin 50 Drag CN- 54 SBAY WIND HE HIEM AVE असे क्रम देश के के मार

the new say wire Corna austral COME DIMO AM ROGI any ear sun ich Artin wiss. MAN TELLES GULF PANT AND S. S. W. B. B. B. अंतिक क्या अस्ति, NEWS CHEWAS EVAN thick are sis. में वहांक दिखाः ज्लाहर उस्मीपारी परव BALO SINE SALE CONS अध्याक्ष कार्क्स्ट्र कार्क्स्ट्र (SASA)। **५**०ई ते/स CANEZ HIME

ज्ञाम सेंचम क्षाकां उत्।। ज्ञाच (म्प्रम के प्रमानक अपक पंत्रीय मेंखे क्षाक पम्म स्टिक्षे अप्रम प्रमा स्टिक्षे अप्रम प्रमे ज्यापां अग्रं कर्छ। हाअम त्वम अह डारं मक् रिक्स रेप्स हाउं से सार ख्रांग

rice raws

હેલ શ્વાર ॥ 3ઉ. <u>સિર્ફ અલ</u> (સ્પ્રમહં સૈ<u>લનું</u> ગાફ મહુ અશ્વ ગુરૂ જ્ઞજ્ઞ સ્થમ નોર્ફ્સ

वर करका करण स्थान कर्म भएक। क्रिक्स कर्मा कर्मा करण कर्म कर्म क्रिक्स। कर्म कर्म कर्मा करमा कर्म कर्म कर्म कर्मा कर्म करमा

भाष्ट्रम १० अपस्य न्रावेश अपस्य करणा। भेष १७ रेज अपस्य अपस्य SU LENNI OMNO RES CONTENTO IN ANGERTA CUE CAL MA ANGERTA ELLUCO OVOL ELLUCO OVO

क्रायह हिस्ता क्षा (इ ज्यापन प्रमेरडम्।। अवात्र भेराज क्यानु र हुम्मर ज्यानुक अभीक क्यान्य ह्यान्यर अदुर्ग असीक क्यान्य ह्यान्यर (इ शक्ष होष्ट्रचे '६. शक्ष राज्य '

त्रीयः दीयः स्ट अस्यां।। त्राः क्षितं विस्ताः (अक्षेत्रः न्रास्पाः) त्राः क्षितं स्थाः (अक्षेत्रः स्थाः। पहर्षे स्थाः। सब्भार्यस्य (अभाषः श्रेष

विभागाम ।

es sto which which in a see sto which is the see contained in the see of the

पश्चीम कास्मितं दसेसाना। आकार देवं आधार हाय पूर्वा क्षेत्रं पाका क्षाव्य । रेकार क्षिय ग्रहाव्य (कार्

२०१२ म प्रमाणिय इस्प्रेक कर्माह State share in the share with the share construction of the share construction of the share continued in the share

काश क्रांत जामां कामा। कार्यमां जार्यमां क्रिक्ट क्रांत जारं भाषां क्रिक्ट क्रिंट अहं का भाषां क्रिक्ट क्रिक्ट क्रांचा। भाषां क्रिक्ट क्रिक्ट क्रांचा। अहं श्रम्याय क्रिक्ट क्रांत्राय

જાજુ અભ્યાસ અસ્ટર્

in a such it is seco. म्बड लाछ CAR CA CAM LY MARTINE SPAS (SW) Mercin rule ofere that म्प्रक इस क्राम्प्रक अव किल अल ayeure of the themin STORE CACHE with who gasto. SPORTEMII ESSERIA OF WASSELL CENT zdistar notulite भाक्त के भाक्त अह स्वार की आकृतक त्येत (स हरता सम्मार्ग स्ट्रास्ट्र स्त्रिक्षणात्र । अव्यं त्रात्यार शिक्षणात्र हर् AMACON II

They went wound on it अंद्रेश केल क्षान केल क्षेत्रकेल केल क्षान केल क्षेत्रकेल केल केल अह विकास ENLES ENTER STATE CENS संब कूप अड अंध्ये अध्यक्ष Les sen of mineral Sin suer. CHENUALO SULULANIE (REMANAL) सरं रहेर भाषात्री रुख wan- surve in sect of ench ench f ment flor som energi र्व मूंख, बार्र अंखी अकार

39 buthar 2457

ब्यु न्युक्त ए क्यु क्यु ॥ हर्षेट क्युक् राष्ट्राच्ये व्यापण क्यु हर्षि स्ट

हुन कहा एका व्यव ॥ 231.02 अन्मक क्रमक क्री, क्राप्ट्ट क्षम स्टूम क्राप्ट क्रिंड क्षम स्टूम क्राप्ट क्षम क्राप्ट क्रमें (2001ये

त्यां ख्रां क्यां नेक्ट मावं॥ स्था क्या अत्य अत्या अत्याकं स्था स्थाप क्यां स्थाप क्यां क्यां क्यां क्रिक्ष क्रिक्ष आता क्रिक्ष क्रिक्ष क्यां क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्यां क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष मंद्र कार्य के के के कि । भरं जास्त्र के के कि के कि । भरं जास्त्र के कि कि कि । भरं के के कि के कि कि कि ।

> प्टर क्रिक स्ट्रा के. इस भुग्नि श्रिक्ष स्ट्रा इस भुग्नि श्रिक्ष स्ट्रा इस भुग्नि श्रुवा इस

स्य १४ १४ १८ मार त्राक्षा रिय भ्यास स्थाप राज्या भूम भ्यास स्थाप राज्या भूमी भ्य मेस्टिंग्ये

त्य क्ष्म क्षम

स्तित म्युक्त ।। स्ट्रांस स्ट

अप्लिक अक्षकं॥ हिस पि (अवं स्मेक्टेंट हें के सेंच में के (अवं प्रम्मेहिष मेंद्रें में में अपेंचे 'मह्युक्त्यं' में में में में में में के अक्षेत्र 'भावें के अक्षेत्र (आक्ष्यमां। अक्षेत्र (आक्ष्यमां।

अति २ १ ०५०१५ १४५४ anse ance « Trans algo som som To mane e To mas som

(कार्य १८८८)। यु श्रिक्ट (कार्य कार्य अपने १८९८) इर्पुड्ड (कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य

संखे अपमा ॥ स्थि अपमार कर्रा प्रका जीना राक्ष अपमार क्रां प्रका क्षि आयोब कृष्टिंग्या स्था शाम स्था स्था श्वा स्था शाम स्था स्था स्था

२०१३ २०१००४४ गुर्ग्यम् अक्रम (त्रमाड अल्लाम अरह) विक्रम हम्माड (अर्था) अक्रमाड अर्था (अर्था)

નાક હ્રાહ લેડમં માક કે કહ્યા । પાત પંચાન મારાં માર્ને ધારે તહે ' હ્યાનુ મારાં મારાં માર્કે મારા હ્યા કર્યા નાઇન મારાં મારા

क्षेत्रके में स्थान भाषामं कराने स्थाने भाषामं कराने स्थाने

र्माक अवकं ४६ हार् ॥ विभाइ भारतं स्मां-संगर्भ कामम क्रिया मूर्व मार्ग्ग हामार्क्ष क्रमां-रेश्ड-रेश्ड-रहा। क्रम्मां

2917 50 (2414)33 2421 الله المعاملة المعا

रुष ५ मामान क्रेस्ट्रेस्ट्र सर्मामासन् प्राप्त स्माप्ताः प्रमासिनं ग्रह महस्मान्यः

CANN REPURY 11

२०११ ४० (पाक्रीय: सॅर्जिस्स्

२०११ २४ (माजुम्म् रूप्यम

र्राष्ट्र देकां आधार प्रमे The wastern अविष स्राट्ड सर्म स्राप्त अग्रे क्रिये क्रांत्र munusia graga gus ma wow गमलीय गर्विताला : RILCHAM GUSAL भी लातव लाग्य क्या ४७/26 द्वलं॥ देखि श्रुवं क्रियं मित्र क्ष्म्य भग्डे, IN SUR WELL WELL MENT 1 apr wen were h way him mem स्ड्राल हैं कि है कि नेश अधार मुद्ध हार YOU DASTEM? Why and enver क्रक्ल रैंग्रं मैंप्रा। 4 (M/NX १४ अपिक्रमें

अहंद (भरम में में।। इश्च क्रिया संबंध क्रम इश्च श्चान (प्रम्म अप्र क्रिया क्रिया क्रम क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया अप्रिय क्रिया उप्रम्म अप्रिय क्रिया

MA-CALL 25 MA EVE (A. MA-CALL 25) MA EVE (A. MA) WAS CA MAS, (A. S. MA) WAS CA MAS, (A. S. MA) MA EVE (A. MA) MAS CA MAS, (A. MA) & CA CALL MAS CAL

૦૭૧**?** ૬૯ (આપ્રમાય કૃષિભં જાર્<u></u>

١.

पण हत कि कि हात ॥ अने अविका क्या हत्य अने अविका क्या विकास

2957 2 Nagas. 2 Mu क्षानं अस्य सेस् ॥ विस्तुम् अस्य नेस् त्याक् स्त्रीतं विस्तुम् अस्य श्रेष्ट् त्याक् अस्य अस्य अस्य अस्य श्रेष्ट्र अस्य अस्य (अस्य स्त्राप् अस्य अस्य (अस्य स्त्राप्

१८ अस्मिक्ट भारतिक प्रस्तिक अस्ति । भारतिक प्रस्तिक अस्ति अस्ति

ansing the commented of a surjection of a survey of a

S Magrai

स्पूरिय कर्ते ध्रावस अव से स्था कार्ये टिपकं सुक्ति पूर्व करण कार्या टिपकं मुस्ति पूर्व करण उद्य अस्मी अप श्राव करण अप अस्म (ताम पर क्रें त्रका में सु)। आकार्षा (ताके (क्रांस मार्थ में में)।

50 NAJAR ADLAL ER ELER LAN ENCH BAGIN "MUNE NAM CHARLE CENTAL" "MUNE NAM CHARLE TICE ALLE RULTINE ENCH THE RULE MAN CENTER अप्रसं स्ताम, अप्रदं सम्बु॥ अप्रसं अप्रसं अस्त्र स्ट्रा अप्र क्रियं स्ट्राम्य अप्रसं अप्रसं स्ट्राम्य (अप्रसं अप्रसं स्ट्राम्य अप्र अप्रसं स्ट्राम्य अप्र अप्रसं

इन मानमू

>9?? ૧૦ મામુમ્યર્ક વૈયુવાન

was sunge restorm We would rive AL WORK THUE TO avous result 1 mor man amore man 以此为此至外别的 put this major manonius अगर्ड अभाग्रे १६३१ रेगार्ग ११ अग्रामक क्राया ॥ was observen et ien annion जनक सिर्म । entinia relieve muin mend til रेंग्से प्रश्न इंग्रेस प्र भाग भारत हाम गाम विषयमार्क साथ । भिष्ट राहिमा म्यान्ट्ड withmys rest town ठाकार मरेशाला ॥ रास्मार्य में विधिर

न्यक्षेत्र २५१३

कर अमेर भारी surve was some were युष्टि एकत्त्व क्रम्म । विद्युम्मला उर्भा उर वित्युक् भीकाभीका, अभिन कि मेरे अक्से ब्रिसिक Arms our war विकासीय जातावरीन CONNE SERVINE 11 wa oma adm Macm IM Kager रले अर्थ अल्बा अर्थ राम राम प्राप्त प्राप्त any anna duya end क्षिक्षा भारत ने ने भुषे करे हे में क्ष्में में करिया है । खरी ब्रह्मक मंत्री घटक 22 HARY ANY II

ક્રેગપક્ષ્યું 17 પડાકહ્

राष्ट्र अर्था मार्थ में कि आप्रक्रमां मुख् was ware by the even Cours exesting; & or orms reger मका राम् शर्म भ्रम्भ राज्य रेखिं उत्ही प्रमाम EUN WEWELL They car was also engl भुक्ति मत्तरमूत्र। ALLE DES LEGIT RECOL 23 कार अहे बट्टा मिलन-क्षित्रण किष्ट्रिक भारतिक प्राप्तिक AND KAN WENT THE marchare aus 11

भ्रश्नाबर्ध्यम् १४ पद्यम्

क्षेत्र एक क्षेत्र एक मित्र राज मित्र, AURIOS DAMES OF CEVENTA, PE WGAY, We ar wing by war CH HAVEL RAMEN क्रिक्टिश क्रिक्टा 35 VI WENCH COLLER अक्टूम द्रिक, स्मीय भरतह जाएक मेर्डिक श्रु 28 CON STONE AND gar sying my MOSE SALVERY 25 or stores 11

ج ٦

મક્કુઆ ૪**૯** નજાજી

है, धर क्षणं खानक हैं। अद्र एक लोग्ड प्याको-म्य प्याण्ड नेक्षण क्ष Mys 45 (8721) ग्रमा क्रम भर्षा है My sa and myen bus, रियर ग्रह्मक अध्येत आई star Ever 2011 vietes me som cours भारते कराई अस्तर हमने अक्ष (क्ष हैंक। see insig me and over worken ser " य देशक विश् राज्य I REDWINE MAKE 5 e 41380

গ্রন্থপরিচয়

.

রবীজ্রনাথের আয়ুকালে স্বডন্ত গীতিকাব্য -রূপে বৈকালীর সহিত পাঠক-সাধারণের পরিচয় ঘটিয়া উঠে নাই। অথচ জানা যায়, বিভিন্ন সময়ে এ বিষয়ে কবির আগ্রহ ছিল। প্রথমতঃ ১৯২৬ সালের মে মাসে (১২ তারিথ। বাংলা ২৯ বৈশাথ ১৩৩৬) কবি যথন অন্তম বার বিদেশ ভ্রমণে বাহির হন ভাহার পূর্বেই একখানি খাতায় আয়পূর্বিক বৈকালী কাব্য স্বহুন্তে লিখিয়া প্রবাসী-সম্পাদকের উদ্দেশে পাঠাইয়া দেন ও লেখেন:

"বৈকালী" লোকহন্তে পাঠাচ্চি। কালিদাসের চিঠিতে এর বিবরণ পাবেন। বেমন ইচ্ছা ছাপাবেন। পরে এগুলি বই আকারে বের করব।··· ২≥ বৈশাধ ১৩৩৩

> স্থাপনার শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর⁰

বিভীয়ত: কবি মুরোপে থাকিতে যথন দেখিলেন 'হাতের অক্র থেকেই ছাপানো চলে। বিশেষ কালী দিয়ে লিখতে হয় এল্যুমিনিয়মের পাতের উপরে', তথন ষেভাবে লেখনের কবিতিকাগুলি একত্র লিথিয়া প্রচারের ব্যবহা করেন (আখ্যাপত্রে ছান-কাল: বুড়াপেস্ট /২৬ কার্টিক/১০০০), অহুরপভাবে প রি ব ধি ত বৈকালীর গান-কবিতাগুলি বিভীয়বার পর-পর সাজাইয়া উহার আখ্যাপত্রে লিথিয়া দেন: ১লা অগ্রহায়ণ/১৩০০/বেল্গ্রেড্।

স্ত্রির প্রবাসী, আখিন ১৩৪৮, পৃ ৬৫৯। সম্পাদক শ্রীরামানন্দ চট্টোপাধ্যায়কে লেখা চিঠি। কালিদাস, শ্রীকালিদাস নাগ।

গ্রন্থপরিচয়ে, উন্নিথিত বৈকালী 'প্রবাসী'-পাণ্ড্লিপি বা পূর্ব-বৈকালী আখ্যায় অভিহিত। শ্রীমতী শাস্তা নাগ উহা বিশ্বভারতীর রবীক্রসদনে দান করিয়াছেন।

১ লেখন ও বৈকালীর উল্লিখিত তারিখ-তৃইটি ষথাক্রমে ১৯২৬ সালের ১২ ও ১৭ নভেম্বর। অর্থাং, লেখন এবং এই বৈকালী লেখায় স্থানগত ব্যবধান বেমন অল্প, কালগত বিচ্ছেদও তেমন নাই বলিলে চলে। লেখন বা বৈকালী-লিখন অবশ্রুই এক দিনে হয় নাই। বালাটন ফ্যুরেডের আরোগ্যভবন হইতে কবি বেল্গ্রেডে আসেন ১৫ নভেম্বর তারিখে। এই বিদেশ-শ্রমণের তথা বহু গান-রচনার বিবরণ পাওয়া ষাইবে শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশ -প্রশীত 'কবির সঙ্গে য়ুরোপে' (১৩৭৬) গ্রন্থে।

ছ্:থের বিষয়, এই পরিবর্ধিত 'উত্তর-বৈকালী' বা 'নব-বৈকালী'র ই অনেকগুলি পাতা আশাস্করণ ছাপা না হওয়ায়' বিনটের পর্যায়ে পড়ে এবং বছ বংসর পরে বৈকালীর আংশিক সংকলন ও স্বল্পমাত্র প্রচার হয় ই পৌষ ১০৫৮ তারিখে (২০ ডিসেম্বর ১৯৫১), ক্ষীণতর আকারে পুন:প্রচার ১০৫৯ ফারুনে। ৪ যে বা যে-সকল গ্রন্থে পত্রসংখ্যা সর্বাধিক, ভদস্থায়ী এই পূর্বপ্রচারিত কিন্তু খণ্ডিত বৈকালীর এক স্থচীপত্র পরে দেওয়া গেল; ইহাতে রবীক্রনাথের স্বহস্তে লেখা পৃষ্ঠাক্তে অস্থ্যান করা ঘাইবে কতগুলি পাতা বা কতগুলি রচনা পূর্বাপর নই হইয়াছে এবং সবগুলি সম্ভবতঃ কিরপ পারম্পর্যে সাজানো হয়্ব

এই নব বৈকালীতে 'প্রবাসী'-পাণ্ড্লিপির প্রায় সমৃদয় রচনাই গ্রহণ করা ইইয়াছিল এরপ অফুমানের কারণ পরবর্তী আলোচনায় স্পাষ্ট হইবে। প্রবাসী মাসিক পত্রে ১৩৩৩ সনের আঘাঢ়-কাতিক ৫ মাসে 'বৈকালী' পর্যায়ে ৩২টি রচনার প্রচার, কিন্তু 'প্রবাসী'-পাণ্ড্লিপিতে রচনা ৪১টি। প্রবাসীতে কয়েকটি রচনা 'বৈকালী' পর্যায়ের বাহিরেও ছাপা হয়, কয়েকটি রচনা কষ্টিপাথরে সংকলন করায় দ্বিতীয়বার ছাপা হয়, তাহা পরবর্তী দ্বিতীয় স্ফটীপত্রে যথাস্থানে যথাবিধি উল্লিখিত।

এ সম্পর্কে ১১ জান্ত্রারি ১৯২৭ তারিখে [২৭ পৌষ ১৩৩৩] বর্লিন হইতে একথানি চিঠিতে প্রশাস্তচক্র মহলানবিশ রবীক্রনাথকে লেখেন: 'কালিতে-লেখা সবগুলোই ভালো হ'য়েছে। পেন্সিলে-লেখা অনেকগুলি নই হ'লো। প্রধান কারণ অনেক জারগায় লেখা ভালো ফোটে নি, মথেই চাপ দিয়ে না লেখায় দাগ বসে নি, তার উপর অতিরিক্ত fixing solution দেওয়ায় দাগ মুছে গেছে। ... ১টা machine আর পুরো সরঞ্জাম (কাগজক্ষ) অর্ডার দিয়েছি, আশা ক'রচি ফেব্রুয়ারি মাসের মধ্যেই শান্তিনিকেতনে পৌছবে... '

বৈকালী গ্রন্থ সম্পূর্ণ না হওয়ার ও কবির আয়ুদালে প্রচার না হওয়ার কারণ স্পষ্টই
বুঝা যাইতেছে। উদ্ধিতি হাতের লেখা বা লেখান্ধন মথামথ ছাপাইবার মন্ত্র /
উপকরণ শান্তিনিকেতনে আমে কি না, ব্যবহারের চেষ্টা হইয়াছিল কি না জানা
মায় নাই।

নিবিশেষে সকল প্রতির পত্রসংখ্যা সমান হয় নাই। কতকগুলি পাতা একেবারে নষ্ট হয়; সংরক্ষিত অক্তান্ত পাতাও সমান সংখ্যায় পাওয়া যায় নাই।

ক্রমিক সংখ্যা এই তালিকারই কিছ্ক উদ্ধৃতিচিহ্ন দিয়া যেগুলি দেখানো হইল, (সেরপ চিহ্ন না দিয়া) নির্দিষ্ট গানের পরে পরে কবি স্বন্ধ: লেখেন। কবি এই বৈকালীর কোনো কোনো পাতায় কেবল এক পিঠে অঙ্কপাত করেন বাংলায়, কখনো বা ইংরেজিতে।

॥১॥ উত্তর-বৈকালী। লেখান্ধন: কার্তিক-অগ্রহায়ণ ১৩৩৩ খণ্ডিতভাবে প্রচার: পৌষ ১৩৫৮ ও ফাল্কন ১৩৫৯

ক্ৰমিক সংখ্যা স্ফনা	রচনার স্থান-কাল মুজিত পৃঠাম
'২৬'। আপনারে দিয়ে রচিলিরে	১ বৈশাখ ১৩৩৩। শাস্তিনিকেতন ২৯
'২৭'। তুমি কি এসেছ ^৬	১ বৈশাখ ১৩৩৩। শাস্তিনিকেতন ৩০
[২৮। আমার প্রাণে গভীর গোপন	
২৯। হার মানালে ভাঙিলে অভিমান	
৩॰ । বাঁধন ছেঁড়ার সাধন হবে	
৫৩১ । আর রেখো না আধারে	<i>\\</i> 03-93
'৩২'। নিশীথে কি কয়ে গেল ^৬	৭ বৈশাগ ১৩৩৩। শাস্তিনিকেতন 🕒 ৩৫
'৩৩'। পথে যেতে ডেকেছিলে ^৬	৮ বৈশাথ ১৩৩৩। শাস্তিনিকেতন ৩৬
	v

৬ নটীর পূজা'র গান বা অমুরূপভাবে ভাবিত সমকালীন অন্ত গান কবি একত্র সন্নিবেশের কল্পনা করিবেন (নষ্ট ২ পাতা বা ৪ পৃষ্ঠায় রচনাসংখ্যা ২৮-৩১) ইহা অমুমান করা গেলেও নিশ্চিত পারম্পর্য স্থির হয় না এবং ?-চিহ্নিত একটি গান সম্পর্কে কিছু সংশয়ও থাকে। নটার পূজা'র এই গান আধার-পাণ্ডুলিপিতে সম্পূর্ণ পাওয়া গেলেও, কোণাকুণিভাবে নীল পেন্সিলের একটি রেথায় লাঞ্চিত, আবার 'প্রবাসী'-পাণ্ডুলিপিতেও স্থান পায় নাই। কিন্তু ইহা যে নটীর পূজা নাটকে প্রথমাবধি প্রযুক্ত অবিশারণীয় এক গান ইহাও সত্য, এবং উত্তর-বৈকালী -সংকলনের কালে রবীন্দ্রনাথ মত-পরিবর্তন করেন নাই তাহাই বা কে বলিবে ? লক্ষ্য করিতে হইবে নটীর পূজা'র সর্বশেষ গান ('আমায় ক্ষম হে ক্ষম') উভয় বৈকালীতেই বৰ্জিত হইলেও, তাহার পূর্বপাঠ ('আজি এই মম সকল ব্যাকুল') অস্তত উত্তর-পরিকল্পনার অঙ্গীভূত (ক্রমিক সংখ্যা ৩৮ / বর্তমান গ্রন্থে '৪৩')। অর্থাৎ, কবি এ ক্ষেত্রে মত বদলাইয়াছেন বা অবহিত হইয়াছেন— হয়তো ইতঃপূর্বে অনবধানে বাদ গিয়াছিল। অপর পক্ষে 'পরবাদী চলে এসো ঘরে' এই দীর্ঘ কবিতার স্থান-সংকুলান না হইলেও (উত্তর-বৈকালীর পৃষ্ঠাসংখ্যার হিসাবে সেরূপই দেখা ষায়), 'প্রবাসী'-পাণ্ডলিপিতে আরও ৩টি গীতিকবিতা তো আছেই (পরবর্তী অর্থাৎ দ্বিতীয় স্ট্রীপত্তে গ-চিহ্নিত) বাহা উত্তর-বৈকালীর অন্তত্ত সংকলনের কথা নয়, দেখাও যায় না, তাহারই একটি— 'আঁধারের লীলা', 'হে চিরন্তন', 'মরণ-

७८। यस यमि	ফুট্ল কুহাম	ফাদ্ধন ১৩৩২		94
৩৫। এসো আ	ামার ঘরে	ফান্তুন ১৩৩২		Cb
৩৬। আপনহা	রা মাতোয়ারা	ফা ন্ধন ১৩৩২		9
৩৭। ওগো জ	লর রানী	कांबन [?] ১७	७ २ 8	-83
৩৮। আজি এ	हे भभ नकन गाकून [चाकि	এ নিরালা কুঞ	। বরণডালা।	
	মহুয়া। ২৫ শ্রাবণ ১৩৩৫]	বৈশাখ ১৩৩৩	[শাস্তিনিকেতন] ৪:	২-৪৩
৩৯। হে মহা	<u> </u>	বৈশাখ ১৩৩৩		88
৪০। সে কো	ন্ পাগল	৮ দেপ্টেম্বর ১৯	১২৬। বল্টিক সমূদ্ৰ	8 0
৪১। কার ৫	চাথের চাওয়ার	<i>></i> সেপ্টেম্বর ১৯	২৬। হান্ব্ৰ্গ	8 9
৪২ রয় ধে ক	চাঙাল :	 সেপ্টেম্বর ১৯ 	২৬। হাৰুৰ্গ	8 9
৪৩। ছুটির বাঁ	শি বান্ধল যে ঐ	৭ দেপ্টেম্বর ১৯	२७। ग्राॄनिक	86
[৪৪। আকাশ,	, তোমায় কোন্ রূপে ১	৭ সেপ্টেম্বর ১৯	२७। ग्राूनिक	8 2
৪৫। তোর বি	ভিতরে জাগিয়া কে বে ১	৮ সেপ্টেম্বর ১৯:	২৬। মাুনিক 🕐	۰]٩
८७। नाहे, नाह	हे ভग्न :	৮ সেপ্টেম্বর ১৯:	२७। मार्निक	43
৪৭। আমার মূ	ক্তি গানের হুরে [আমার	মৃক্তি আলোয়	আলোয়]	
	3	৯ সেপ্টেম্বর ১৯	২৬। ছার্বর্	65
8৮। मका न र	লোর আলোয় ২	• সেপ্টেম্বর ১৯:	২৬। ছার্বর্গ	60
৪৯। ভালো ল	াগার শেষ যে না পাই [মং	্র, তোমার শে	ষ ষে না পাই]	
	٤	১ সেপ্টেম্বর ১৯	२७। कें ्र्रेगॉर्टे	€8
৫০। চাহিয়া দে	দথো রসের স্রোতে ২	৪ সেপ্টেম্বর ১৯	২৬। কল্যোন	e e
৫১। তুমি উষা	ার সোনার বিব্দু ২	৪ সেপ্টেম্বর ১৯২	১৬। কল্যোন	69

সাগরপারে' নটার পৃঞ্জা'র গীতিগুচ্ছে সাজানো হয় নাই তাহাও বলা যায় না।
নটার পৃঞা ১৩৩০ বৈশাধের মাদিক বহুমতীতে প্রকাশিত, দেই স্থত্তে '২৭',
২৯, ৩০, ৩১, '৩২', '৩৩', ৩৯ সংখ্যা-যুক্ত গানগুলিরও বহল প্রচার— বিতীয়
স্চীপত্তে মাদিক বহুমতীর (বৈশাধ ১৩৩৩) পৃথগ্ভাবে উল্লেখ করা হইবে না।
নই এক পাতায় পর-পর এই হুটি গান ছিল ইহা অহুমান নয়, প্রভায় বলা চলে।
কেননা, রচনার পারস্পর্যে যেমন, তেমনি আধার-পাণুলিপিতে ও লিপিচিত্রিত
মাদিক বহুমতীতে (গীতাইক: বৈশাধ ১৩৩৪) ইহাদের সন্নিবেশ লক্ষ্য করিলে
অক্সরূপ কল্পনা করার কোনো কারণ নাই।

২ <i>৫ সেপ্টেম্বর ১৯২৬</i> । ড্যুসে ল্ ডফ ্	@ 9
৬ অক্টোবর ১৯২৬। বলিন	eb
১১ অক্টোবর [১৯২৬] প্রাগ্	6 2
১২ অক্টোবর [১৯২৬] প্রাগ্	৬৽
২০ অক্টোবর [১৯২৬] ভিয়েনা	৬১
২৭ অক্টোবর [১৯২৬] বুডাপেন্ট্	હર
৩০ অক্টোবর ১৯২৬। বুডাপেন্ট্	৬৩
२ नत्त्रवत ১२२७। वालावन कार्त्वछ।	
হাবারি	৬৪
। : আশ্রমের হে বালিক।]॰	
৩০।২৭ মে ১৯২৬]রোহিত সাগর ৬০	2- ७ ৮
র] ২০	
০ [৮মে ১৯২৬] শাস্তিনিকেতন ৬:	د ۹ - ۹
াণী] ২১ নবেম্বর [১৯২৬] বৃকারেস্ট্	92
২৪ নবেম্বর [১৯২৬] ডার্ডানেলিস্	90
	৬ অক্টোবর ১৯২৬। বলিন ১১ অক্টোবর [১৯২৬] প্রাগ্ ২০ অক্টোবর [১৯২৬] প্রাগ্ ২০ অক্টোবর [১৯২৬] ভিয়েনা ২৭ অক্টোবর [১৯২৬] ব্ডাপেস্ট্ ৩০ অক্টোবর ১৯২৬। ব্ডাপেস্ট্ ৯ নবেম্বর ১৯২৬। বালাটন ফা,ুরেড। হান্ধারি : আশ্রমের হে বালিকা] ৩।২৭ মে ১৯২৬] রোহিত সাগর ৬৫ র]২০ ০ [৮ মে ১৯২৬] শান্তিনিকেতন ৬৪ লাণী] ২১ নবেম্বর [১৯২৬] ব্কারেস্ট্

দ গানের পর্যায় শেষ হইয়াছে কল্পনা করিয়া (বস্তুতঃ তাহা হয় নাই) কবি অতঃপর কিছুকাল পূর্বে রচিত (১৩৩০ বৈশাথে ও জ্যৈষ্ঠে) ২টি কবিতা এই বৈকালীর শেষে সংকলন করিলেন। (উভয়ই অনেক পরে, ১৩৩৯ ভাদ্রে, পরিশেষ কাব্যের অঙ্গীভূত হয়।) তঃথের বিষয়, বৈকালীর বিরলপ্রচার কোনো কোনো কপিতে 'আশ্রমবালিকা'র সবটা পাওয়া গেলেও, একথানি পাতার অভাবে 'দিনাবসান' কবিতার আহুমানিক ও শুবক খোওয়া গিয়া কেবল শেষ শুবক পাওয়া যায় এই বৈকালীতে। বিকালীতে ও পরিশেষ কাব্যে মৃথ্য পাঠভেদ এই যে, প্রথম ৬ ছত্তের শুচ্ছটি পরবর্তী ৬ ছত্তের সহিত 'ঠাই-বদল' করিয়াছে।

১০ এই খণ্ডিত বৈকালীতে কেবল শেষ শুবকটি দেখা যায়। মূল রবীন্দ্রপাণ্ড্রলিপিতে বিভিন্ন সাময়িক পত্রে ও নৈমিন্তিক পত্রে (জন্মোৎসব-দিবদে শান্তিনিকেতনে লিপিচিত্র-রূপে প্রচারিত) ৫ শুবক থাকিলেও, এ ক্লেত্রে ৪ শুবক ছিল মনে হয়—পরিশেষ কাব্যেও সেইরূপ। বাদ গিয়াছে পূর্ণান্ধ কবিতার চতুর্থ শুবক। কৌতৃহলের বিষয় এই য়ে, বৈকালীর 'প্রবাদী' পাণ্ড্রলিপিতেও ৪ শুবকের বেশি নাই এবং সে ক্লেত্রে বাদ দেওয়া হইয়াছে 'সম্পূর্ণ' কবিতার শেষ শুবক। বর্তমান বৈকালীতে সবগুলি শুবকের একত্র সংকলন; এ কবিতার এই রূপও কবি বারংবার

পূর্বপ্রচারিত বৈকালীর উদ্ধিথিত স্ফ্রীপত্রের পরিপ্রক বা অন্নপ্রক হিসাবে আরও পূর্বের বৈকালীর ('প্রবাসী'-পাণ্ড্লিপি) "ক্রমিক" সংখ্যা -সহ এক স্ফ্রীপত্র এখানে দেওয়া আবশুক। তাহাতে প্রবাসী মাসিক পত্রে আংশিক প্রকাশের বিষয় ষেমন জানা ষাইবে তেমনি উত্তর-বৈকালীতে আছে বা ছিল বলিয়া ষেগুলি দেখা যা য় অথবা অ য় মা ন ক রা যা য় তাহারও হিসাব মিলিবে বর্তমান তালিকার অবদ্ধ এবং বন্ধনীবদ্ধ সংখ্যার সংকতে। কেননা, পূর্বসংকলিত স্ফ্রীপত্রের প্রয়োজনীয় সব সংখ্যাই এই স্ফ্রীপত্রে দেখানো হইবে বন্ধনীর মধ্যে। প্রসন্ধক্রমে বলা আবশুক, এই পূর্ব-বৈকালীতে ('প্রবাসী'-পাণ্ড্লিপিতে) রচনার স্থান কাল কোথাও লেখা নাই; তাহা অক্ত স্থতে, বিশেষতঃ আধার-পাণ্ড্লিপি দেখিয়া, পরে জানা যাইবে অথবা অনুমান করাও অসম্ভব হইবে না।—

॥ ২ ॥ পূর্ব-বৈকালী বা 'প্রবাসী' পাণ্ডলিপি । রচনা : মাঘ ১৩৩২ - বৈশাখ ১৩৩৩ অংশতঃ প্রবাসী পত্রে মুদ্রণ : বৈশাখ-কার্তিক ১৩৩৩

সংখ্যা হচনা বিশেষ শিরোনাম সাময়িক পত্তে প্রকাশ। পৃষ্ঠাছ ১। দোলে প্রেমের দোলন চাঁপা। দোল-পূর্ণিমায়। সর্জ পত্ত। চৈত্ত ১৩৩২। ৫৭০

২। ফাগুনের নবীন আনন্দে। তদেব। সবুজ পত্র। চৈত্র ১৩৩২। ৫৭১

৩। অনস্তের বাণী তুমি

্বিসস্তের দৃতী তুমি। নববধ্। ভারতী। চৈত্র ১৩৩২। ৪৬৭ । গান। রবি।^{১১} চৈত্র [১৩৩২] ৩৮০

স্বীকার করিয়াছেন।

রবীক্রলেথাঙ্কনে আলোচ্য বৈকালীর আখ্যাপত্রে তারিথ আছে '১লা অগ্রহায়ণ' বা ১৭ নভেম্বর ১৯২৬। মনে করা যাইতে পারে, ঐ সময়ের মধ্যে এই বৈকালীর উদ্দেশে ধাতব পত্রে 'দিনাবসান' কবিতা অবধি লেখা হয় এবং উহাই সংকলনের শেষ রচনা কল্পনা করায় কবি উহার শেষে স্বাক্ষরও করেন। পরে আরও ধে-তৃটি গান লিখিয়া দেন তাহার তারিথ যথাক্রমে ২১ ও ২৪। আরও পরের গান হয়তো ধাতুপত্রে লেখার সময় বা স্থযোগ হয় নাই কিন্তু বর্তমান গ্রন্থে সংকলিত।

১১ 'রবি' ত্রিপুরা রাজ্যের ত্রৈমাদিক পত্র, এ ক্ষেত্রে ত্রিপুরান্ধ ১৩৩৫। রবি পত্তে ও ভারতী'তে পাঠভেদ অল্পই কিন্তু রচনাকালের নির্দেশ পৃথক—

ভারতী: ২১শে ফান্ধন ১৩৩২

त्रवि: ১৮ই ফাস্কন ১৩৩২

রবীক্রনাথ আগরতলায় সম্মানিত রাজ-অতিথি-রূপে ছিলেন ১৩৩২ ফাল্পনের ১০-১৪

8	তোমার বীণা আমার মনোমাঝে	
¢	চপল তব নবীন আঁখি ছটি*	প্রবাসী। আষাঢ় ১৩৩৩
		ছটি। মৃক্তি। মহয়। : ১৩৩৬] ৪০৩
७	নৃপুর বেজে যায়*	প্রবাসী। আবাঢ় ১৩৩৩। ৪০৪
91	লিখন তোমার ধূলায় হয়েছে*	প্রবাসী। ভাত্র ১৩৩৩। ৭১৫
١ ٦	জানি তোমার অজানা নাহি গো*	প্রবাসী। আবাঢ় ১৩৩৩
	[অজানা জীবন বাহিন্তু। উদ	্ঘাত। মহয়া : ১৩৩৬] ৪০৪
اد	की फूल ঝितिल∗	প্রবাসী। শ্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৭
۱ • د	আমার লতার প্রথম মৃক্ল*	প্রবাসী। স্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৬
22	কেন রে এতই যাবার ত্বরা*	প্রবাসী। ভাক্ত ১৩৩৩। ৭১৭
५२ ।	কাঁদার সময় অল্ল ওরে*	প্রবাসী। ভাত্র ১৩৩৩। ৭১৬
201	বিনা সাজে সাজি*	প্রবাসী। শ্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৬
184	কী পাই নি তারি*	প্রবাসী। ভাত্র ১৩৩৩। ৭১৬
201	সেই ভালো সেই ভালো*	প্রবাসী। ভাদ্র ১৩৩৩। ৭১৬
301	অনেক কথা যাও যে ব'লে*	প্রবাসী। ভাক্ত ১৩৩৩। ৭১৫
391	দে পড়ে দে আমায় তোরা*	প্রবাসী। ভাক্ত ১৩৩৩। ৭১৬
146	পাতার ভেলা ভাষাই নীরে*	প্রবাসী। শ্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৫
१७।	এবার এল সময় রে তোর*	প্রবাসী। ভাব্র ১৩৩৩। ৭১৭
[७٩]	ওগো জলের রাণী। জলের রাণী।	ভারতী। কার্তিক-অগ্র. ১৩৩২। ২১১
	প্রবাদী	। কষ্টিপাথর : ফাব্ধন ১৩৩২। ৬৮১
२०।	শেষ বেলাকার শেষের গানে*	প্রবাসী। স্বাবণ ১৩৩৩। ৫৫৫
521	আধেক ঘুমে নয়ন চুমে*	প্রবাসী। ভাব্র ১৩৩৩। ৭১৭
२२ ।	এ পথে আমি যে*	खवामी। खावन ১०७०। १८१
२७।	দিন পরে যায় দিন*	প্রবাদী। আশ্বিন ১৩৩৩। ৮৫৯

তারিথে ইহা পূর্বোক্ত ত্রৈমাসিক পত্রে (পৃ ৪৫৯-৪৬৩) জানা যায় : '১০ই ফাল্কন, রাত্রি প্রায় দশ ঘটিকার সময় বিশ্বকবি রবীক্রনাথ কুঞ্জবনপ্রাসাদে পদার্পণ করেন। । । । রাসলীলা দেখিয়া কবি বড়ই মুগ্ধ হন। । । তার পর দিন (১৪ই ফাল্কন) দ্বিপ্রহরে কবি রবীক্রনাথ কুঞ্জবন ত্যাগ করিয়া কলিকাতা অভিমূথে যাত্রা করিলেন।' এই কয়দিনে রবীক্রনাথ কোন্ গান রচনা করেন, পরবর্তী বোড়শ পাদ্টীকায় আলোচনা করা হইবে।

২৪। তপস্বিনী হে ধরণী* প্রবাসী। শ্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৬

২৫। বিরস দিন, বিরল কাজ# প্রবাসী। শ্রাবণ ১৩৩৩

[विवन मिन, विवन कांक। विकशी। महशा: ১००७] >२ ००७

[৩৪] বনে ষদি ফুটল কুহুম* প্রবাসী। আখিন ১৩৩৩। ৮৫৯

[৩¢] এসো আমার ঘরে* প্রবাসী। আখিন ১৩৩৩। ৮৫≥

[ণ] আঁধারের লীলা আকাশে আলোক লেথায় লেথায়

[আঁধারের লীলা আলোর রঙ্গ বিরক্ষে। রবীক্রপাণ্ডুলিপি ২৭]^{১৩}

['৩২'] নিশীথে কী কয়ে গেল* প্রবাসী। আখিন ১৩৩০। ৮৬০

[২৮] আমার প্রাণে গভীর গোপন* প্রবাসী। **প্রা**বণ ১৩৩০। ৫৫৬

১২ বর্তমান তালিকার '[৩৭]' বাদ দিয়া একাদিক্রমে ২৫টি গান কবি উত্তর-বৈকালীর প্রথমাংশের জন্য লিখিয়া দেন, এ অন্থমান সংগত; প্রচারিত বৈকালী খণ্ডিত হওয়াতেই '২৬' সংখ্যা হইতে আমাদের দৃষ্টিগোচর। [৩৭] সংখ্যার গানটি স্থানবদল করিয়া পরে গিয়াছে, এক পৃষ্ঠাতেও আবদ্ধ থাকে নাই (পূর্ব-বৈকালীতে এক-পৃষ্ঠা-পরিমিত)। উত্তর-বৈকালীর স্থচনার ১৪ পাতা বা ২৮ পৃষ্ঠা হারাইয়াছে; এই পৃষ্ঠার হিসাবও ঠিক মিলিবে যদি মনে রাখা যায় 'তোমার বীণা' (৪) গানে ২ পৃষ্ঠা এবং 'চপল তব নবীন আঁখি' (৫) গানে ৩ পৃষ্ঠাই লাগিবার কথা। ('প্রবাদী'-পাঞ্লিপিতে শেষোক্ত রচনা ঠাস-ভাবে লেখায় ২ পৃষ্ঠা হইয়াছে।)

পূর্ব ও উত্তর উভন্ন বৈকালীর 'যৌথ সম্পদ' স্বদেশে লেথা গান ও কবিতা। সে হিসাবে উত্তর-বৈকালীর ধে-হুটি গান পূর্ব-বৈকালীতে প্রত্যোশিত অথচ নাই, প্রথম স্ফীপত্তে ভাহাদের সংখ্যা— '৩৬' ও '৩৮'। দ্বিতীয় স্ফীপত্তে উহাদের স্থান শৃত্য।

- ৩২টি গান প্রবাসী পত্রে (আষাঢ়-কার্ভিক ১৩৩৩) 'বৈকালী' পর্যায়ে মুদ্রিত।
 অধিকল্প ইহার ৩টি গান 'কষ্টিপাথর' অংশে শান্তিনিকেতন পত্র হইতে (নববর্ষ : বৈশাথ ১৩৩৩) পূর্বেই সংকলিত (জ্যৈষ্ঠ ১৩৩৩)।
- পত সংখ্যায় চিহ্নিত করিয়া কোন্টির নির্দেশ হইতে পারে বলা ষায় না। অর্থাৎ,
 উত্তর-বৈকালীর নষ্ট ছই পাতায় বা চার পৃষ্ঠায় ২৮-৩০ -সংখ্যক তিনটি গান সম্পর্কে
 অন্ত্যানের ন্যায্যতা থাকিলেও, তাহার বাহিরে আর-একটি সম্পর্কে সংশয়
 থাকিয়াই যায়। এইব্য প্রথম স্ফীপত্রে সংখ্যা '২৮' '৽ ৩১' এবং ষষ্ঠ পাদটীকার
 প্রথম অন্ত্রেছেদ।
- ১৩ শ্রীমতী লীলা মন্ত্র্মদারের স্বাক্ষরসংগ্রহের থাতায় ৪ ছত্ত্রে প্রথম রচনা ৫ চৈত্র ১৩৩২ তারিখে। সেইটি গান ও কবিতার বীক্ষরপ। সেই দিনে অথবা তু-এক

[২৯] হার মানালে ভাঙিলে অভিমান* প্রবাসী। আশ্বিন ১৩৩৩। ৮৬• कानि कन्म। खावन ১७७७। २८८ [৩•] বাঁধন ছেঁড়ার সাধন হবে* প্রবাসী। কার্তিক ১৩৩৩। ১ । নববর্ষ। শান্তিনিকেতন। বৈশাখ ১৩৩০। १० প্রবাসী। কষ্টিপাথর : শ্রাবণ ১৩৩০। ৬২১ ['৩৩'] পথে যেতে ডেকেছিলে* প্রবাসী। কার্তিক ১৩৩৩। ১ ['২৬'] আপনারে দিয়ে রচিলি রে* প্রবাসী। কাতিক ১৩৩৩। ১ । নববর্ষ। শাস্তিনিকেতন। বৈশাথ ১৩৩৩। ৬৯ প্রবাসী। কষ্টিপাথর: শ্রাবণ ১৩৩৩। ৬২১ ['২৭'] তুমি কি এসেছ মোর দ্বারে* প্রবাসী। আষাঢ় ১৩৩э। ৪০৪ । नववर्ष । भास्त्रिनित्कजन । देवभाव ५७७७ । १० [?] হে চিরন্তন। নববর্ষ। শাস্থিনিকেতন। বৈশাথ ১৩০০। ৬৯ প্রবাসী। কষ্টিপাথর : শ্রাবণ ১৩৩৩। ৬২১ প্রবাসী। কাতিক ১৩৩৩। ২

[?] মরণসাগরপারে* প্রবাসী। কার্ভিক ১৩৩৩। ২ (লিপিচিত্র) উত্তরা। কার্ভিক ১৩৩৪। ৯৩

পরবাসী চলে এসে। ঘরে। প্রবাসী। প্রবাসী। বৈশাথ ১৩৩৩। ১
[পরিণামে তুইটি গান: পরবাসী চলে এসো ঘরে ইত্যাদি

এসো এসো প্রাণের উৎসবে ইত্যাদি

একটি স্বাক্ষর-কবিতা: কোথা যাবে সে কি জানা নেই ইত্যাদি]

[৬১] বাঁশি যথন থামবে ঘরে। জন্মোৎসবের দিনে। প্রবাসী। জ্যৈষ্ঠ ১৩৩৩। ৩৭৬। কবির কামনা। কল্লোল। জ্যৈষ্ঠ ১৩৩৩। ৭৫

জন্মোৎসবে প্রচারিত লিপিচিত্র: ২৫ বৈশাথ ১৩৩৩/শাস্তিনিকেতন

[৩৯] হে মহাজীবন, হে মহামরণ* প্রবাসী। কার্তিক ১৩৩**০**। ২

দিনের মধ্যে (১২ চৈত্রের পরে নয়) যে গীতিকবিতায় উহার পরিণতি, আধার-পাণ্ডলিপিতে (রবীন্দ্রপাণ্ডলিপি ২৭) তাহা বিচিত্র রেথাজালে ও মসীবিলেপনে অবল্পুপ্রায়। অথচ দেশে থাকিতেই একটি 'গ্রাহ্মপার্চ' লেখা হয় তাহার সাক্ষ্য 'প্রবাসী'-পাণ্ডলিপিতে। বিদেশে উহার আর-এক রূপের উদ্ভব আধার-পাণ্ডলিপিতেই, তাহা পরবর্তী তৃতীয় স্ফটীপত্রে পাণ্ডলিপি-পরিগণিত '৪৭' সংখ্যায় ও ২৩-সংখ্যক পাদটীকায় দেখা যাইবে। গীতবিতানে প্রচল গান -রূপে ষাহার সংকলন তাহা আরও পরে (ভাক্র ১৩৩৫) দেখা দেয় ১২৭-সংখ্যক রবীন্দ্র-পাণ্ডলিপিতে মহয়া কাব্যের পরিকল্পনা-কালে।

পারম্পর্য হবছ একরপ না হইলেও নির্দিষ্ট কাল-সীমার মধ্যে স্বদেশে লেখা একই গান-কবিতার গুচ্ছ পূর্বোত্তর উভয় বৈকালীতে থাকিবার কথা। কিন্তু যে-কোনো কারণে হউক, সে প্রত্যাশার সর্বথা পূরণ হয় না। কেননা—

১ নষ্ট পাতার সংখ্যার সহিত রচনার সংখ্যা মিলাইয়া মনে হয়, পূর্ব-বৈকালীর স্থান্থি কবিতা 'পরবাসী চলে এসো ঘরে' (বর্তমান সংকলনে ক্রমিক সংখ্যা ৩৯) উত্তর-বৈকালী'তে দেওয়া হয় নাই এবং আমাদের অন্থমানে বর্তমান সংকলনের '৩১' '৩২' '৩৩' (প্রথম তথা ছিতীয় স্থচীপত্রের ২৮, ২৯, ৩০) দেওয়া হইলেও, নটীর পূজার গীতিগুচ্ছের আন্থাকে—

আর রেখো না আঁধারে (পূর্ব-বৈকালীতে নাই)
আঁধারের লীলা
হে চির নৃতন
ধরণসাগরপারে

ত্বিতীয় স্থচীপত্রে গু-চিহ্নিত)

উল্লিখিত চারিটি গানের ঠিক কোন্টি সংকলন করায় উত্তর-বৈকালীতে ৩১ সংখ্যা পূর্ণ হইয়াছিল, তাহাও জানা নাই। একাধিক গানের স্থান ছিল না। '? ৩১' সংখ্যা দিয়া প্রথমটির স্থান দেওয়া হইয়াছে প্রথম স্ফচীপত্রে।

- ২ উত্তর-বৈকালীতে থাকিলেও, 'আপনহারা মাতোয়ারা' ও 'আজি এই মম সকল ব্যাকুল' গীতিকবিতা-ফুটি (বর্তমান সংকলনের '৪২' ও '৪৩' কিন্তু উত্তর-বৈকালীতে' '৩৬' ও '৩৮' সংখ্যা) পূর্ব-বৈকালীতে দেওয়া হয় নাই; এজক্সই সংকলিত বিতীয় স্ফালিতে পাওয়া যাইবে না।
- ত বাংলা ১৩৩২ সনের মাঘ শেষ না হইতে 'গুগে। জলের রানী' (সংকলিত উভয় স্চীপত্রেই সংখ্যা '৩৭' এবং বর্তমান সংকলনে '২০') লেখা হয় এরূপ অন্ত্মানের কারণ আছে; উহার পুরোগামী গীতিকবিতা না ধরিলেও, রবীক্রনাথের পুরাতন খদড়া-পাগুলিপিতে দেখা বায় উহার পরে, এমন-কি, পূর্বোত্তর বৈকালীতে সংকলিত আরও হুটি গানের পরে লেখা হয়—

সে যে মনের মামুষ কেন তারে ইত্যাদি।

এই গান এবং হ য় তো ইতঃপূর্বে উল্লিখিত 'আর রেখো না আঁধারে আমায়' নটীর পূজা'র এই গানটি কোনো বৈকালীতে সংকলন করা হয় নাই। একমাত্র অনবধানই ইহার কারণ হইতে পারে।

শ্রীমতী রমা মজুমদার (কর) -সংগৃহীত রবীন্দ্রনাথের যে পুরাতন থসড়া-

পাঙ্লিপির উল্লেখ এইমাত্র করা হইল, তাহাতে বৈকালীর যে কয়টি গান পর-পর পাওয়া যায় তাহার এক তালিকা এখানেই দেওয়া চলে—

	मःथा :	वकानी	পূৰ্ব-বৈকালী	ৰৰ্ডমান
٤	ওগো জলের রানী	৩৭	09	٤.
ર	আপনহারা মাতোয়ারা	৩৬	×	85
૭	এসো আমার ঘরে	9 €	٥¢	२৮
8	সে যে মনের মাত্র্য কেন তারে	×	×	×
¢	বনে যদি ফুটল কুস্থম	ଓଷ	৩৪	२१

সমৃদয় বৈকালীর আধার-স্বরূপ যে রবীন্দ্রপাণ্ডুলিপির (অভিজ্ঞান-সংখ্যা ২৭) প্রাসন্ধিক স্চীপত্র পরে দেওয়া ঘাইতেছে তাহাতে দেখা ঘাইবে, উল্লিখিত গীতপঞ্চকের চতুর্থ বাদ দিয়া চারিটি আছে বিপরীত পারম্পর্যে; এ কারণে এবং তেমন কোনো কাটাকুটি নাই বলিয়াও মনে হয়, সম্ভবতঃ 'কর-পাণ্ডুলিপি' হইতেই নকল করা হইয়াছে (অনবধানে একটি বাদ পড়িয়াছে ?)— ২৭-সংখ্যক রবীন্দ্রপাণ্ডুলিপিই উহাদের মূলাধার বা খসড়া-খাতা হইতে পারে না।

২৭-সংখ্যক রবীক্রপাগুলিপি পূর্ব উত্তর এবং বর্তমান সকল বৈকালীর আধারপাগুলিপি-স্বরূপ এবং অধিকাংশ রচনার থসড়া-থাতাও বটে। সেই পাগুলিপিতে
মধ্যে-মধ্যে রচনার তারিথ ষেমন দেওয়া আছে, ১৪ কবিতা-গানের পারস্পর্য হইতেও
রচনাকাল সম্পর্কে স্রুস্পন্ট ধারণ। করা যায় (কেবল স্থটীপত্র-মৃত '২'—'৫'এর পারস্পর্য
উন্টাইয়া লওয়া দরকার কর-পাগুলিপির সাক্ষ্য-অন্থ্যায়ী); তাহা ছাড়া অন্থান্ত
স্থত্তে অনেক রচনার স্থনিদিই তারিথ জানা যায়— এ বিষয়ে বিশেষ আলোকপাত হয়
শ্রীজনাদিকুমার দন্তিদারের সমকালীন থাতাপত্তে। রবীক্রনাথ নৃতন গান রচনা করিয়াই
তাঁহার 'সকল গানের ভাগুারী' দিনেক্রনাথকে অথবা সমীপন্থ অন্ত কোনো গায়কগুণীকে ডাক দিতেন ওই গান কণ্ঠে ধারণ করিতে; এজন্ত তাঁহাদের সংগৃহীত
রবীক্রপাণ্ড্লিপিতে বা থাতা-পত্তে যে তারিথ বা যে সময় জানা যায়, সচরাচর তাহা
আন্তান্ত হইতে দেখা গিয়াছে। শ্রুদ্ধেয় জনাদিকুমার দন্তিদারের নিকট যে-যে তারিথ
জানা গিয়াছে, পরবর্তী স্থচীপত্রে তাঁহার নামোল্লেথে বন্ধনী-মধ্যে সেগুলি সংকলন করা
হুইবে।—

১৪ পরবর্তী স্থচীপত্রে যে তারিথের অন্য কোনো স্থ্র দেওর। নাই তাহা সব সময়েই পাণ্ডলিপি ২৭ -ধৃত। স্থচীপত্রের প্রথম সারিতে পাণ্ডলিপির মৃ দ্রিত পৃষ্ঠাক্কের উল্লেখ। পরে পাণ্ডলিপি-গত পারম্পর্যের গণনা কেবল বৈকালী লইরা। প্রত্যেক ক্ষেত্রে উদ্ধৃত স্থচনাংশের পাঠ ও বানান পাণ্ডলিপি-সম্মত।

॥ ৩॥ রবীন্দ্রপাণ্ড্লিপি ২৭^১ বর্তমান বৈকালী প্রসঙ্গে গান ও কবিতার সামগ্রিক স্ফুটীপত্র

পার্	লিপি	- ধৃত	ৰৰ্তমান গ্ৰন্থে
পৃষ্ঠা	পার	পর্য হুচনা রচনা র	ক্ষিক সংখ্যা
1	٥	পরবাসী চলে এসো ঘরে শেষ ২ গুবকের পূর্বে: ২২ মাঘ ১৩৩২	৫ ৩
4	ર	বনে বদি ফুটল কুম্বম (৪)১৬ উত্তর-বৈকালী: ফান্ধন ১৩৩২	ર૧
5	৩	এসো আমার ঘরে (৩) তদেব: ফাল্কন ১৩৩২	२৮
6	8	আপনহারা মাতোয়ারা (২) তদেব: ফাল্কন ১৩৩২	82
7	t	প্রগো জলের রাণী (১)১৬ তদেব: ফান্ধন [?] /১৩৩২	2 •
8	৬	দোলে প্রেমের দোলন চাঁপা ১১ ফাল্কন [১৩৩২]	>
10	٩	काश्चरनत नवीन जानत्म ১৫ काञ्चन ১७ ०२	ર
17	ь	অনস্তের বাণী তৃমি [বসস্তের দৃতী তৃমি] রবি/ভারতী : ১৮/২১ ফার	ন '৩২ ৩

১৫ শান্তিনিকেতনে রবীক্রমদন-সংগ্রহের এই পাণ্ডুলিপি মূলতঃ ১৯২৬ খৃদ্টান্দের এক ভারারি; এক-এক তারিথে এক-এক পৃষ্ঠা। রচনার খসড়া-থাতা বলিয়া (ব্যতিক্রম সম্ভবতঃ শুচনার ৫।৬টি গীতিকবিতা, বিশেষতঃ সংখ্যা '২'-'৫' / পৃষ্ঠা '4'-'7') কেবল বৈকালীর গান-কবিতা নয়, অন্ত কবিতা, বিশেষতঃ লেখন-উদ্দিষ্ট বছ কবিতিকা (লেখন-বহির্ভূত ও ফুলিঙ্গ-ধৃত কয়েকটি) ইহাতে স্থান লইয়াছে। রচনারিক্ত বা রচনা থাকিলেও মসীবিলেপনে লুপ্তপ্রায় বা প্রচ্ছন্ন এরূপ পৃষ্ঠা ষেমন আছে, ছি ডিয়া ফেলা হইয়াছে এমন পাতার সংখ্যাও নিভাস্ত অল্প নয়। বৈকালী শেষ হওয়ার সঙ্গে পৃষ্ঠা '201', অথবা বর্তমান সংকলন-ধৃত আরও ২টি গান ধরিলে পৃষ্ঠা '203'— বৈকালীর সীমা), অর্থাৎ ১৯২৬ সনের শেষে দেশে ফিরিয়া, কবি 'নটার পৃষ্ঠা'র নবরূপায়ণে মনোনিবেশ করেন; তাহারও পরে 'নটরাজ' নৃত্যাম্মতাভিনয়ের কল্পনা কবির মনে আদে— এই পাণ্ডুলিপির বৈকালী-উত্তর আংশে তাহারও সাক্ষা আছে।

১৬-১৬ স্থচনার পরে পরে বন্ধনীবন্ধ সংখ্যা দিয়া যথার্থ পারস্পর্যের নির্দেশ কর-পাণ্ড্লিপি -অন্থসারে। পরবর্তী রবীন্দ্র-পাণ্ড্লিপির তালিকায় কর-পাণ্ড্লিপির উল্লেখ প্রথমেই আছে। অস্তত এই গীতচতুষ্টয় সম্পর্কে উহাকেই পূর্বতন আধার-পাণ্ড্লিপি বলিতে হয়। ২৭-সংখ্যক রবীন্দ্রপাণ্ড্লিপিতে নকল করিবার কালে বিক্তাসের বিপর্যয় হইয়াছে, অর্থাৎ কালক্রমের বৈপরীত্য; নকল বলিয়াই কাটাকুটি

18	3	তোমার বীণা স্বামার মনোমাঝে [নির্মলকুমারী : চৈত্র ১৩৩২]১৭	8
19	۶۰	['ঝাঁধারের লীলা' গীতিকবিতার মসীবিলিগু ও তিরম্বত পূর্বপাঠ	
		(১৯৫८ চ্রব্রে১১৯৯১)	२३
20	>>	চপল তব নবীন শাঁখি স্তবক ১-২ -উত্তর : ১২ চৈত্র ১৩৩২	¢
22	>5	নৃপুর বেজে যায়	৬
23	20	निथन ट्यांमात्र ध्नात्र रुरत्राद्ध धृनि	٦
24	78	জানি তোমার অজানা [অনাদি : ১৬ চৈত্র ১৩৩২]	ь
27	>¢	কি ফুল ঝরিল বিপুল [অনাদি : ১৭ চৈত্র ১৩৩২]	ء
28	36	আমার লতার প্রথম মুকুল [অনাদি ১৭ চৈত্র ১৩৩২]	>•
29	١٩	কেন রে এতই যাবার স্বরা [স্থনাদি : সকাল ১৮ চৈত্র ১৩৩২]	>>
30	74	কাঁদার সময় অল্প ওরে [অনাদি : সকাল ১৮ চৈত্র ১৩৩২]	> 2
31	75	বিনা সাজে সাজি [অনাদি : সকাল ১৯ চৈত্ৰ ১৩৩২]	30
33	२०	কি পাই নি তারি [অনাদি : হুপুর ১৯ চৈত্র ১৩৩২]	28

নাই বলিলে চলে। এখন দেখিতে হইবে— আলোচ্য গীতচতুইয়ের যে গান 'গুগো জলের রানী' কর-পাণুলিপি অন্থদারে অগ্রগণ্য, ফান্ধনে তাহা লেখা হয় কি না দন্দেহ। সংকলিত বিতীয় স্ফীপত্রে '১৯' ও '২০'র অন্তর্বর্তী [৩৭] সংখ্যায় দেখা যাইবে ভারতীতে ১০৩২ সনের কার্তিক-অগ্রহায়ণে ইহার প্রথম প্রকাশ এবং প্রবাসী পত্রের 'কষ্টিপাথর' অংশে পরবর্তী ফান্ধনেই সংকলন। গানটি ফান্ধনে লেখা ও ছাপা হইলে, ফান্ধনের প্রবাসীতে তাহার সংকলন আশা করা যায় না। প্রচলিত গীতবিতান-৩ - সম্পারে, কবির 'দালিয়া' ছোটো গল্পের আখ্যান লইয়া যে নাটক রচনার সংকল ছিল, ইহা তাহারই প্রস্তাবনা-গীত।

অবশিষ্ট তিনটি গানের সহিত পরের ছটি গান যোগ করিয়া একটি শুচ্ছ বাঁথিলে দেখা যায়, 'রবীন্দ্রনাথ ও ত্রিপুরা' (আদিন ১৩৯৮) গ্রন্থ-অন্থুসারে সব-ক'টি গান (২৭-সংখ্যক রবীন্দ্র-পাণ্ডলিপিতে পৃষ্ঠাক্ষ বথাক্রমে 6, 5, 4, 8 এবং 10) ত্রিপুরায় বা আগরতলায় লেখা। 'রবি' তৈমাসিক অন্থুযায়ী (একাদশ পাদটীকা স্রন্থীয়া) আগরতলায় কবির এই স্থিতিকাল ১০-১৪ ফান্ধুন ১৩৩২। এই শুচ্ছের শেষ গানের তারিখটি বিশেষ উপলক্ষ্যের ছোতক, র চ না র নয় তাহা জানা যাইবে পরবর্তী রবীন্দ্র-পাণ্ডলিপির বিবরণে (সংখ্যা ২)। বর্তমান গ্রন্থের '৯৯' পৃষ্ঠা স্রন্থীয়া।

১৭ স্ত্রন্থ্য শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশ -প্রণীত : বাইশে শ্রাবণ (১৩৭৩), পৃ ৩৪-৩৭

34	२ऽ	<u>দেই ভালো দেই ভালো</u>	•••	***	: ¢
37	२२	অনেক কথা যাও যে বলে [অনাদি :	२১ हिन्न १७७२]		১৬
38	२७	দে পড়ে দে আমায় তোরা	•••	•••	>1
39	₹8	পাতার ভেলা ভাসাই নীরে	•••	•••	74
40	ર¢	এবার এল সময় রে তোর [অনাদি :			79
43	રહ	শেষ বেলাকার শেষের গানে [অনাচি	हे : २ ६ देहत्व ५७७२]		52
44	२१	আধেক ঘুমে নয়ন চুমে	•••	•••	२२
45	२৮	এ পথে আমি ধে	•••	•••	२७
47	45	আমার প্রাণে গভীর গোপন	•••	•••	৫১
48	٥.	হার মানালে ভাঙিলে অভিমান [অন	गिषः मकान २१ हि	ব্র ১৩৩২]	৩২
49	৩১	किन भारत यांग्र किन	•••	•••	₹8
51	৩২	বাঁধন ছেঁড়ার সাধন হবে	•••	•••	৩৩
52	೨೨	षाभनातः पितः উত্তর-বৈকালী	: ১ বৈশাখ ১৩৩২		00
53	ଓଷ	তুমি কি এসেছ মোর খারে তদে	ব : ১ বৈশাখ ১৩৩২		৩৬
54	oe	হে চিরন্তন	•••	•••	৩৭
55	৩৬	মরণদাগরপারে তোমরা অমর		•••	৩৮
56	৩৭	তপস্বিনী হে ধরণী	•••	•••	20
56	৬৮	वित्रम मिन, वित्रल कांक	•••	•••	२७
59	೯೮	নিশীথে কি কয়ে গেল মনে উ	ত্তর-বৈকালী : ৭ বৈ	ণাখ ১৩৩৩	৩৽
61	8 •	षात त्रत्था न। षाधात्त ^{>৮}			
62	82	আজি এই মম সকল ব্যাকুল	উত্তর-বৈকালী : বৈ	শাধ ১৩৩৩	8
65	(62	2) ৪২ আমায় ক্ষম হে ক্ষ ^{১৯}			
67	80	পথে ধেতে ডেকেছিলে উত্তর-বৈ	বৈকালী : ৮ বৈশাখ	,৩৩৩	98

১৮ 'নটার পূজা' গীতিগুচ্ছের অন্ততমরূপে বৈকালীতে সংকলন প্রত্যাশিত। অথচ পূর্ব-বৈকালীতে নাই, উত্তর-বৈকালীতে ছিল কি না নিশ্চিত বলা যায় না।

১৯ নটার পূজা'র বহুখ্যাত গান। 'ভায়ারি' হইতে এক পাতা ছি ভিয়া ফেলায় উহার পূর্বপাঠের (যেটি উত্তর-বৈকালীতে সংকলিত / বর্তমান সংকলনে '৪৩') মুখামূখি আসিয়া গিয়াছে এবং শেষ স্তবকণ্ড লেখা হইয়াছে '62' পৃষ্ঠার নিমভাগে।
এই উত্তর পাঠ নাট্যগরিমায় বহুপ্রচারিত ও আদৃত হওয়াতেই বোধ করি
স্বতম্ব কাব্যে সংকলনের ইচ্ছা কবির ছিল না। কিন্তু পূর্বপাঠ সম্পর্কে সে কথা বলা

68	88	হে মহাজীবন, হে মহামরণ ^২ °	•••	88
69	8 @	वैंगि यथन थांमत्व चत्त्र 🤏 🜊	২৫ বৈশাখ ১৩৩৩	8•
83	89	আশ্রমের হে বালিকা ^{২২}	८७७ [४७७७]	83
143	89	वाधातत नीना जात्नात तत्न वितर	20	و ۶

চলে না; এজন্মই পূর্ব-বৈকালীতে না দিলেও উত্তর-বৈকালীতে কবি এটি শ্বরণ করিয়াছেন—ঈবৎপরিবর্তিত পাঠ পরে (আখিন ১৩৩৬) মহয়া'র অন্ধীভূত।

- ২০ নটার পূজা'র গান এই পাণ্ড্লিপিতে এখানে শেষ হয়। কবির জন্মোৎসব-অমুষ্ঠানে,
 শাস্তিনিকেতন আশ্রমে, ২৫ বৈশাধ ১৩৩৩ তারিথের সন্ধ্যায় ইহার প্রথম অভিনয়।
 শ্রীমতীর ভূমিকায় শ্রীমতী গৌরীদেবী (বহু)। কবি-কর্তৃক ইহার রচনা ও
 নাট্যপ্রস্তুতি সম্পর্কে নানা কথা রবীক্রজীবনীতে ও অক্যত্র জানা যায়। শ্রীমতী
 নির্মলকুমারী মহলানবিশ বলেন (কবির সঙ্গে মুরোপে / ১৩৭৬ / পু ৫): 'দেখতে
 দেখতে তিন দিনের মধ্যে 'নটার পূজা' খাড়া হয়ে উঠল।… তিন দিনের দিন পড়া
 শোষ হলে… রিহার্সেলের পালা। পাঁচিশে বৈশাধ সন্ধ্যেবলা 'কোণার্ক' বাড়ীটার
 চাতালে…' প্রথম অভিনয়, কবির জন্মোৎসব উপলকে। / অফুমান হয়, নাটকে
 প্রযুক্ত কতকগুলি গান হয়তো অস্তরের অক্যবিধ প্রেরণায় আগেই লেখা
 হয়; ১৩৩৩ বৈশাধের শাস্তিনিকেতন পত্রে 'নববর্ব' শিরোনামে যে কয়টি গান
 প্রকাশিত তয়ধ্যে রহিয়াছে 'বাঁধন ছেঁড়ার সাধন হবে' ও 'তুমি কি এসেছ
 মোর ছারে' (বর্তমান সংকলনে '৩৩' ও '৩৬')।
- ২১ বৈকালী-ধৃত অদেশে লেখা গান-কবিতার পর্যায় শেষ হয় এই 'দিনাবসান' কবিতার ৫ অবকে। তয়৻ধ্য তৃতীয় অবক কাটিয়া দেন কবি আলোচ্য পাঙ্গলিপিতে, এরপ দেখা য়য়। 'প্রবাদী' পাঙ্গলিপিতে (পূর্ব-বৈকালী) ত্যাগ করেন শেষ অবক। আর, পরিশেষ কাব্যে (সম্ভবতঃ উত্তর-বৈকালীতেও) চতুর্থ তবক বজিত। বৈকালীর বর্তমান সংস্করণে স্ব-ক'টি ভবক মুখোচিত পারম্পর্যে সংক্লিত।
- ২২ রচনা 'রোহিত সাগর' পার হওয়ার কালে ইহা জানা যায় বৈকালীর লেথাঙ্কনে।
 আলোচ্য পাণ্ড্লিপির পাঠে 'মাঘের বিদায়ক্ষণে' ইত্যাদি ৬ ছত্র মূল কবিতায়
 পরে অন্তথ্রবিষ্ট; তাহার স্থান, অবিকল যেমন দেখা যায় পরিশেষ কাব্যে; শেষ
 পৃষ্ঠায় 'স্থা হও [করো] · · রচি লহ নৈবেছের মালা।' এই ৬ ছত্র তারিথ
 লেখার পরে সংযোজিত, হয়তো বা ঐ দিনেই রচিত।
- ২৩ পুরাতন রচনার নৃতন পাঠ সন্দেহ নাই। বর্তমান স্ফীপত্রে '19' পৃষ্ঠায় ইহার পূর্বস্থান নির্ধারিত। এ সম্পর্কে পুরোগামী অয়োদশ পাষ্টীকা স্তইব্য। পাণুলিপিতে

```
তদেব : 'লাঞ্চিত' ইংরেজি রূপাস্তর : ১৭ জুলাই ১৯২৬ [ ১ শ্রাবণ ১৩৩৩ ]
145 89
151 86
        সে কোন পাগল<sup>২৪</sup> ৮ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [২২ ডাব্র ১৩৩৩ ]
152 ৪৯ কার চোথের চাওয়ার<sup>২৪</sup> ৯ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [২৩ ভারা ১৩৩৩ ]
                                                                   86
153 ৫০ রয় যে কাঙাল<sup>২৪</sup> ১০ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [২৪ ভারু ১৩৩৩]
                                                                   89
154 ৫১ ছটির বাঁশি বাজল যে
                                ১৭ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ ি৩১ ভাব্র ১৩৩৩ ]
                                                                   86
157 ৫২ [ আকাশ, তোমায় কোনু ]<sup>২৫</sup> বস্থমতী : তদেব [ ৩১ ভাদ্র ১৩৩৩ ]
158 ৫০ তোর ভিতরে জাগিয়া বস্থমতী: ১৮ সেপ্টেম্বর '২৬ [১ আখিন '৩০] ৫০
161 ৫৪ নাই নাই ভয় ১৮ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [১ আম্বিন ১৯৩৩]
                                                                   ¢ >
                              ১৯ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [২ আশ্বিন ১৩৩৩]
163 ৫৫ আমার মৃক্তি
                                                                   42
165 ৫৬ সকাল বেলার আলোয় ২০ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ ি আখিন ১৩৩৩ ব
                                                                   63
167 ৫৭ ভালো লাগার শেষ যে [ মধুর, ভোমার শেষ যে ]
                               ২১ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [ ৪ আশ্বিন ১৩৩৩ ]
168-69 ৫৮ চাহিয়া দেখো রসের ২৪ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [৭ আশ্বিন ১৩৩৩ ]
171 ৫৯ পুপে, ] তুমি উষার সোনার বিন্দু
                                         তদেব [৭ আশ্বিন ১৩৩৩ ]
                                                                   65
172 ৬০ আপন গানের টানে
                              ২৫ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [৮ আশ্বিন ১৩৩৩ ]
175 ৬১ আপ্নি আমার কোন্থানে ৬ অক্টোবর ১৯২৬ [১৯ আশ্বিন ১৩২৩] ৫৮
177 ৬২ ওগো স্থন্দর, একদা কি জানি ১১ অক্টোবর ১৯২৬ [২৪ আখিন '৩৩ ] ৫৯
179 ৬০ কোথায় ফিরিস ১২ অক্টোবর ১৯২৬ [২৫ আখিন ১৩৩৩]
181 ৬৪ আকাশে তোর তেমনি ২০ অক্টোবর ১৯২৬ [৩ কার্তিক ১৩৩৩ ]
183 ৬৫ পথ এখনো শেষ হল না ২৭ অক্টোবর ১৯২৬ [১০ কার্ডিক ১৩৩৩]
                                                                   હર
185 ৬৬ দিনের বেলায় বাঁশি ৩০ অক্টোবর ১৯২৬ [১৩ কার্তিক ১৩৩৩]
                                                                  60
187 ৬৭ পাম্ব পাথীর রিক্ত কুলায় ২৬ ৯ নবেম্বর ১৯২৬ [২৩ কাতিক ১৩৩১]
197 ৬৮ তব অমূর্ত্ত বাণী [ অরূপ, তোমার বাণী ]
                               ২১ নবেম্বর ১৯২৬ [ ৫ অগ্রহায়ণ ১৩৩৩ ]
```

পরবর্তী ভাষান্তর বা রূপান্তর (মধ্যে অন্ত লেখা নাই) আছন্ত বর্জনচিহ্নিত; সম্ভবত: সেই পাঠ অপ্রকাশিত: The frolic of light in the sky of darkness etc.

- ২৪ রচনার স্থান-কাল-সহ শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশের হাতে লেগা।
- ২৫ কাগজের অপর পিঠে মদীবিলেপন-হেতু স্থচনার কয় ছত্ত ত্রুপাঠ্য।
- ২৬ ধুরার ফিরিয়া আসার আগে এই গানের সর্বশেষ পদে একটি পাঠপ্রমাদ তথা

199 ৬৯ বাশি আমি বাজাই নি কি ২৪ নবেম্বর ১৯২৬ [৮ অগ্রহারণ ১৩৩০] ৬৬
201 ৭০ ক্ষত ক্ষতি যত ২৫ নবেম্বর ১৯২৬ [৯ অগ্রহারণ ১৬৩০] ৬৭
203 ৭১ যা পেয়েছি প্রথম দিনে তদেব [৯ অগ্রহারণ ১৩০০] ৬৮

পূর্ব-বৈকালীর গীতিকবিতাবলীর সাময়িক পত্রে প্রচার তালিকাবদ্ধ হইয়াছে দিতীয় স্ফীপত্রে। অক্যাক্ত গানের সাময়িক পত্রে প্রচার তৃতীয় স্ফীপত্রে নাই; পাণ্ডু.- পারম্পর্বের ও বর্তমান গ্রন্থের ক্রমিক সংখ্যা -সহ এখানে দেওয়া গেল—

রবী স্রপাণ্ডলিপি ২৭		সামরিক পত্তে	প্রচার		ৰৰ্তমান গ্ৰন্থে
8৮-€€	গীতাইক	মাসিক বস্থ্য	তী। বৈশাখ	১৩৩৪, পৃ ২-৪	84-42
e5-e4, 50-53	গীতপঞ্চক	সবুজ পত্ৰ। কা	তিক-অগ্ৰহায়ণ	১७७७, श् ३४३-३	ર

				ev-ee,	@9-@b
৬২-৬৪	গান	উত্তরা।	মাঘ ১৩৩৩, পৃ ৩৭৫-৭৬		<i>ce-</i> 63
৬ ৫-৬ ૧	গান	উত্তরা।	ফান্ধন ১৩৩৩, পৃ ৪৩৭-৩৯		હ ર-৬8
৬৮-৬৯	গান	উত্তরা।	চৈত্র ১৩৩৩, পৃ ৪৯১-৯২		৬৫- ৬৬
90	গান	উত্তরা।	रेकार्ष ১००८, পৃ ৬১৯		৬৭
95	গান	উত্তরা।	বৈশাখ ১৩৩৪, পৃ ৫৫১		৬৮

প্রাসঙ্গিক রবীন্দ্র-পাণ্ডুলিপি

বৈকালী-সম্পর্কিত রবীন্দ্র-পাণ্ডুলিপি কোথায় কী আছে, যত দূর জানা যায়, তাহার কালক্রমিক তালিকা এথানে দেওয়া গেল—

- ১ রবীন্দ্র-পাণ্ড্লিপি। রমা কর -সংগ্রহ। শ্রীমতী রমা মজুমদার (কর) ও শ্রীস্থরেক্রনাথ করের বংশধরগণের সম্পত্তি। আলোকচিত্রে বে গানগুলি দেখা যার, বর্তমান সংকলনে সংখ্যা: ২০, ২৭, ২৮ ও ৪২।
- রবীন্দ্র-পাণ্ডলিপি। শ্রীমতী রেবা মহলানবিশ (সরকার) ও শ্রীস্থশোভন সরকার
 -সংগ্রহ। কলিকাতা। বর্তমান সংকলনের প্রথম ও দ্বিতীয় গান, প্রত্যেকটির

মৃত্রণপ্রমাদ দীর্ঘকাল ধরিয়া চলিয়া আসিতেছে: ভালে / রবীক্রসদনের আলোচ্য পাণ্ডলিপি ও ১২৭-সংখ্যক রবীক্রপাণ্ডলিপি তথা মহলানবিশ-সংগ্রহের স্বতন্ত্র রবীক্রপাণ্ডলিপি এই সব-ক'টির অন্থসারে উহা 'ভালে', বৈকালীর লেখাক্ষন মনোযোগ দিয়া দেখিলে অক্তর্রপ নহে আর উত্তরা মাসিক পত্রেও ঐ পাঠই পাওয়া যায় ১৩৩৩ ফাল্কনে।

তুইটি পাঠ, প্রত্যেকটি স্বাক্ষরিত এবং বিতীয় গানের উভয় পাঠই '১৫ ফান্ধন ১০০২' এই তারিখ-যুক্ত। আহ্বদ্ধিক তথ্য না জানিলে এই তারিখ কিন্ত প্রমাদজনক।
শ্রীস্থশোভন সরকারের চিঠিতে (৮. ৪. ১৯৭৪) জানা যায়, শ্রীমতী রেবার সহিত ওই তারিখে (২৭ কেব্রুয়ারি ১৯২৬/১৫ ফান্ধন ১০০২ ফান্ধনপূর্ণিমা) তাঁহার বিবাহ হয় এবং ওই সমন্ন রবীক্ষনাথ 'যত দূর মনে পড়ে, আগরতলায় ছিলেন। গান তু'টি পাঠিয়েছিলেন তাঁর আশীর্বাদ হিসাবে— বিবাহসভায় গান তুটি ছেপে অতিথিদের দেওয়া হয়েছিল।' অর্থাং, '১৫' তারিখটি রচনার দিন নয়, ১১ বা ১২ হইতে বোধ করি বাধা নাই। '১৬-১৬' সংখ্যার পাদটীকা প্রষ্টব্য। বাহুল্য হইলেও বলা থাক্, বে-কোনো গানের একটি পাঠের সহিত আর-এক পাঠের হবহু মিল নাই এবং গীতবিতান-ধৃত প্রচল গানের পাঠও পৃথক্। তবে কোনো পাণ্ডুলিপিতেই 'দোলে প্রেমের দোলন চাঁপা' গানে অধিক পাঠভেদ ঘটে নাই, বিশেষতঃ গীতবিতানে ও প্রবাদী'-পাণ্ডলিপিতে পার্থক্য আসলে নাই।

- ৩ রবীক্স-পাণ্ড্রলিপি ২৭। শাস্তিনিকেতন-রবীক্সদন। ইতঃপূর্বে দেখানে। হইয়াছে, ইহাই পূর্বাপর সকল বৈকালীর সমুদ্ধ রচনার বিশেষ আধার-পাণ্ড্রলিপি।
- ৪ নটার পূজা'র প্রাদিক রবীন্দ্র-পাণ্ড্লিপি। অভিজ্ঞানসংখ্যা ৪৩ ও ২৫৫ক-২৫৫খ। শাস্তিনিকেতন-রবীন্দ্রদদন। ২৫৫ক সংক্রিপ্ত অফ্রানপত্র বা বিষয়বিবরণ বলা যায়। অক্ত ছই পাণ্ড্লিপি অসম্পূর্ণ। প্রথম পাণ্ড্লিপিতে বর্তমান সংকলনের ৩০ ও ৩৬ / বিতীয়ে ৩০, ৩৩ ও ৪৪ / তৃতীয়ে ৩০, ৩৪, ৩৬ ও ৪৪ এই সংখ্যায় নিশিষ্ট গানগুলি দেখা যায়।
- নটার পূজা। রবীক্র-পাণ্ডলিপি, প্রায় সম্পূর্ণ। নাটকের স্কচনা হইতে রবীক্রনাথের হাতে পত্রাক্ক (পৃষ্ঠাক্র নয়) ৩৪ অবধি; তয়ধ্যে '১৮' '১৯' ও '২৫' অক্কিত পাতা (পৃষ্ঠা নয়) যদি থাকিয়া থাকে, ইহাতে নাই। মৃত্রণার্থ ব্যবহৃত হইয়াছিল। বিষয়্প্রচনার পূর্বে অক্স-রচনা-রিক্ত একথানি পাতায় দেখা যায়— শান্তিনিকেতনে '২৫শে বৈশাখ ১৩৩৩' তারিথে কবি ইহা 'পরম কল্যাণীয়া শ্রীয়তী গৌরী'কে দেন, 'নটরাজ নৃত্য করে নব নব স্কল্রের নাটে' এই স্থপরিচিত মাঙ্গলিক কবিতায়। শান্তিনিকেতনে শ্রীয়তী গৌরী দেবী ও শ্রীসন্তোবকুমার ভঞ্জের সংগ্রহ। ইহাতে বর্তমান সংকলনের ৩০, ৩০, ৩৪, ৩৬ ও৪৪ সংখ্যায় নির্দিষ্ট গানগুলি দেখা যায়।
- ৬ 'প্রবাদী'-পাণ্ড্লিপি। শান্তিনিকেতন রবীন্দ্রসদনে শ্রীমতী শান্তা নাগ -কর্তৃক উপস্তত। ইহাকে পূর্ব-বৈকালী বলা হইয়াছে। বর্তমান সংকলনের ১ হইতে ৪০ অবধি সংখ্যায় নির্দিষ্ট, জাহা ছাড়া ৪৪-সংখ্যক গানের আধার-পাণ্ড্লিপি। '৪০' সংখ্যার শেষ ন্তবকটি এই পাণ্ড্লিপিতে নাই— পূর্বমূদ্রিত (অগ্রহায়ণ ১৩১৩) ও

প্রচারিত (পৌষ ১৩৫৮) বৈকালী হইতে এই সংকলনে গৃহীত; পূর্বমৃত্তিত ও প্রচারিত গ্রন্থে অক্ত তবকগুলি যে পাতার ছিল তাহা পাওরা বার নাই। দশম পাদটীকার প্রথম অফুচ্ছেদ দ্রন্থা।

- শহলানবিশ-সংগ্রহ। কলিকাতা। শ্রীপ্রশাস্তচন্দ্র মহলানবিশ ও শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশ গৃষ্ঠীয় ১৯২৬ সনে কবির য়ুরোপ-শ্রমণের সন্ধী ছিলেন।^{২৭} বে গীতিকবিতাবলীর স্বতন্ত্র পাগুলিপি ইহাদের সংগ্রহে আছে, বেগুলির আলোকচিত্র দেখিবার ও বর্তমান সংকলনে প্রয়োজনমত ব্যবহার করিবার স্থবোগ পাওয়া গিয়াছে, সেগুলির সংখ্যা: ৪৫-৪৭ ও ৫৯-৬৮, তাহা ছাড়া ৬৫-সংখ্যক গানের পূর্বপাঠ বা পূর্বাভাস।
- ৮ বন্ধীয় সাহিত্যপরিষদ্ -সংগ্রহ। কলিকাতা। বিভিন্ন সময়ে বে গানগুলি ছাপা হয় সবৃদ্ধ পত্তে, তাহারই সংগ্রহ। তন্মধ্যে ষেগুলির আলোকচিত্র দেখিবার স্থাোগ হইয়াছে, বর্তমান সংকলনে তাহাদের সংখ্যা: ১ এবং ৫৩-৫৫, ৫৭-৫৮।
- রবীক্রপাণ্ডলিপি ১২৭। শাস্তিনিকেতন-রবীক্রসদন। ইহা মহয়া কাব্যের অয়্পতম আধার-পাণ্ডলিপি। সম্ভবতঃ মহয়ার অয়ৢৢৢীভূত করার উদ্দেশে বর্তমান সংকলনের এই গীতিকবিতাবলি ইহাতে লেখা হয় বা কম-বেশি রূপান্তরিত হয়: সংখ্যা ৫, ২৬, ৭-১০, ২৯, ৪৩, ৪৬, ৪৭ ও ৬৪। তয়াধ্যে কেবল ৪টি কার্যতঃ মহয়া কাব্যে গৃহীত—

ৰৰ্তমান সংকলনে

ভোরের পাথী নবীন আঁথি / চপল তব নবীন আঁথি (৫) অজানা জীবন বাহিম্ন / জানি, তোমার অজানা নাহি গো (৮)

प्याना जापन पारिष्ठ / जानि, दर्शनात्र प्रजाना नारि देश

विवन मिन, विज्ञम कांक / विज्ञम मिन, विज्ञन कांक (२७)

আজি এ নিরাল। কুঞে, আমার / আজি এই মম সকল ব্যাকুল (৪৩)

এবং প্রচল গীত -রূপে এই পাপুলিপিরই আর-একটি, গীতবিতানে—

আঁধারের লীলা আকাশে আলোক লেখায় লেখায় (২৯)

—ইহার পরবর্তী বিভিন্ন ছত্তে পাঠভেদ প্রচুর।

২৭ এমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশের হাতের লেখায় ৩টি গান ষেমন আছে আধারপাণ্ডলিপিতে (বর্তমান সংকলনে সংখ্যা ৪৫-৪৭) তেমনি আর-কতকগুলি গানের
নকল তিনি করেন রচনাকালেই স্বতম্বভাবে (সংখ্যা ৪৫-৫৮); তন্মধ্যে শেষ
৪টি ব্যতীত প্রত্যেকটি কবি-কর্তৃক স্বাক্ষরিত— কেবল লক্ষ্য করিবার বিষয় এই
যে, শেষ রচনায় 'বেলা কথন্ যায় গো বয়ে… মূলতানে ॥' এই শেষ কলি ও
রচনার স্থান-কাল কবির স্বহস্তে লেখা।

পাঠভেদ

রবীক্ররচনায়, গানে কবিতায়, পাঠভেদের অস্ত নাই বলিলে বিশেষ অত্যুক্তি হয় না। তাহার পঞ্জীকরণের শুভস্ফচনা হইয়া থাকিলেও, সর্ব গুরে 'সামগ্রিক' অথবা সর্বাদীণ পাঠপঞ্জীপ্রণয়নের সময় স্থবোগ অথবা সম্ভাবনা এখন নাই। ১৩৭৪ বৈশাথে সাগ্যাহিক দেশ পত্রের 'সাহিত্যসংখ্যা'য় উত্তর-বৈকালীর সহজ্জভা পুনংপ্রচার উপলক্ষ্যে বৈকালী লইয়া পর্যালোচনা করিয়াছেন শ্রীপুলিনবিহারী সেন; শ্রীপুভেন্দুশেথর মুখোপাধ্যায়ের সহযোগে তিনি উত্তর ও পূর্ব উভয় বৈকালীর বহু পাঠভেদের দৃষ্টাস্কও দিয়াছেন। এ কাজে প্রচুর বন্ধ পরিশ্রম অভিনিবেশ ও অভিজ্ঞতা যেমন প্রয়োজন, এজন্ত বহুবিধ উপকরণেরও একত্র সমাহার হওয়া চাই। পূর্বোক্ত দেশ পত্রে (পৃ ৫৭) তাহার তালিকা এরপ—

- ১ বিভিন্ন পাণ্ডলিপি
- ২ প্রাসন্ধিক সাময়িক পত্র
- ৩ গীতসংগ্রহের বিভিন্ন সংস্করণ
- ৪ স্বর্রলিপি-সংকলনের বিভিন্ন সংস্করণ
- বিভিন্ন নাটক— নাটকের বিভিন্ন সংস্করণ বাহাতে বৈকালীর গানের ব্যবহার
- ৬ এতংসম্পর্কিত নাট্যাভিনয়ের অভিনয়পত্রী
- ৭ বিভিন্ন উৎসবামুষ্ঠানে মৃদ্রিত গীতস্থচী বা গান
- ৮ প্রাসঙ্গিক বিভিন্ন গ্রন্থের প্রেস-কপি, কবি-কর্তৃক সংশোধিত নির্দেশাদি
- » গীতশিক্ষার্থীদের সংগৃহীত রবীন্দ্রনাথের হাতে লেখা কাগজ বা 'কার্ড্'। অতংপর শ্রীপুলিনবিহারী সেন সত্যই বলেন, সম্ভবতং এ তালিকা আরও বাড়ানো ষায়।^{২৮}

যাহ। হউক, বৈকালী সম্পর্কে থাহার। সেরপভাবে পর্যালোচনা করিতে প্রস্তুত ও আগ্রহী, দেশ পত্রে ওই আলোচনা ও প্রাথমিক পাঠপঞ্জী তাঁহাদের অবকা-দুষ্টান্ত-স্বরূপ বর্তমান গ্রন্থে বিস্তারিত পাঠভেদ- সংকলনের অবকাশ নাই, কেবল দৃষ্টান্ত-স্বরূপ বৈকালীর কয়েকটি গান-কবিতা সম্পর্কে বিশেষ আলোচনা করা হইল।—

পাঠবৈচিত্র্য : নিদর্শন

বলা আবশ্রক ষে, বর্তমান সংকলনে ৪০ ও ৪১ সংখ্যা দিয়া নির্দিষ্ট ছুইটি কেবল কবিতা; পরে (ভাজ ১৩৩৯) পরিশেষ কাব্যে অভীপ্সিত পরিবর্তনে ও শিরোনাম-যোগে গৃহীত—

> আশ্রমবালিকা: আশ্রমের হে বালিকা দিনাবসান: বাঁশি যখন থামবে ঘরে

পরিবর্তন সম্পর্কে ৯ ও ১০ -সংখ্যক পাদটীকায় বলা হইয়াছে। বিতীয়টির সাময়িক প্রচার (বছবার) সম্পর্কে জানা ঘাইবে বিতীয় স্ফীপত্তের একোনশেব উল্লেখে।

2

হুইটি সংকলন মূলতঃ কবিতা হুইলেও গানে পরিণতি লাভ করে; তন্মধ্যে একটির (বর্তমান সংকলনে পঞ্চম: চপল তব নবীন আঁথি ছুটি) প্রথম তবকে ভাষার কোনো পরিবর্তন না করিয়াই স্থর দেওয়া হয় কিন্তু অপরটি হুইতে বিচিত্রভাবে ছুইটি গানের (অধিকন্ত একটি স্বাক্ষর-কবিতার) উদ্ভব হয় কিভাবে, তাহা কৌতূহলজনক। গান-তুইটি প্রচল পীতবিতান হুইতে উদধুত করা যাইতেছে।—

বর্তমান সংকলনে ৩৯ সংখ্যায় নির্দিষ্ট পরবাসী চলে এসো ঘরে

গান ১:

পরবাসী, চলে এসো ঘরে	2
অন্তক্ত সমীরণভরে।	ર
ওই দেখো কতবার হল থেয়া-পারাপার	•
সারিগান উঠিল অম্বরে।	8
আকাশে আকাশে আয়োজন,	•
বাতাদে বাতাদে আমন্ত্রণ।	•
মন যে দিল না সাড়া, তাই তুমি গৃহছাড়া	1
নিৰ্বাসিত বাহ্যিক অন্তরে ।	ь

কবিতার ছত্র ১ ও ২, গানেও সেইরপ। কবিতার তৃতীয় স্তবকের শেষ ৩ ছত্র, গানে ছত্র ৩-৪ রূপে সান্ধানো হইয়াছে। কবিতার দ্বিতীয় স্তবকের ছত্র ১-২, গানে ছত্র ৫-৬। কবিতার চতুর্থ স্তবকের ছত্র ৩-৪, গানে ছত্র ৭ এবং ওই স্তবকের শেষ ছত্রে 'পরবাসী' ষথন 'নির্বাসিত' রূপ ধরিল সেটি এই গানের শেষ ছত্র।

গান ২ :

এসো এসো প্রাণের উৎসবে,	>
एक्निनवाश्त्र त्वप्तत्व,	ર
পাথির প্রভাতী গানে এসো এসো পুণ্যস্নানে	৩
আলোকের অমৃতনিক রে॥	8
এদো এদো তুমি উদাসীন।	¢
এসো এসো তুমি দিশাহীন।	6
প্রিয়েরে বরিতে হবে, বরমাল্য আনো তবে—	٩
দক্ষিণা দক্ষিণ তব করে॥	ь
হু:খ আছে অপেকিয়া দারে—	ء
বীর, তুমি বক্ষে লহে। তারে।	> 0
পথের কণ্টক দলি এসো চলি, এসো চলি	22
ঝটিকার মেঘমন্দ্র স্থরে॥	\$2

কবিতার সপ্তম অন্তম ও নবম ওবকই যথাক্রমে এই গানে প্রথম দিতীয় ও তৃতীয় গুবক। গানের প্রথম ছত্ত্রে প্রোণের', কবিতায় অন্তর্মপ হলে: মাটির / গানের পঞ্চম ও ষষ্ঠ উভয় ছত্ত্রের স্থচনাতেই 'এসো' কিন্তু কবিতায়: ফিরে / গানের দশম ছত্ত্রে 'বক্ষেলহো' হইলেও কবিতায় অন্তর্মপ হলে: বির' লহো /

এই কবিতার আধারে রবীন্দ্রনাথ একটি স্বাক্ষর-কবিতা লিখিয়া দেন শ্রীশ্রীপতি বস্থকে; উত্তরকালে আনন্দবাজার পত্রিকায় (রবিবার। ২৪ বৈশাথ ১৬৬৮) ও ১৩৭১ সনের '২৫ বৈশাথ' উৎস্বপত্রে (বিশ্বভারতী) ইহার লিপিচিত্র প্রকাশিত:

স্বাক্ষর-কবিতা

কোখা যাবে সে কি জানা নেই ?
বেথা আছ ঘর সেথানেই ।
মন যে দিল না সাড়া,
তাই তুমি গৃহছাড়া,
পরবাসী বাহিরে অন্তরে ।
আঙিনার আঁকা আলিপনা
আঁথি তব চেয়ে দেখিল না ।
মিলন ঘরের বাতি
জলে অমলিন ভাতি
সারারাতি জানালার পরে ।

এসো এসো উদাসীন	>>
এদো এদো দিশাহীন	75
পরবাসী চলে এসে। ঘরে।	20

२६ विभाश । ১৩৩৮

মূল কবিতার চতুর্থ-পঞ্চম শুবক লইয়। ইহার ছত্র ১-১০। তন্মধ্যে নবম ছত্ত্রের 'অমলিন', মূলতঃ ছিল: অনিমেষ / পূর্ব কবিতার অষ্টম স্তবকের প্রথম-দ্বিতীয় ছত্র হইতে এ কবিতার ছত্র ১১-১২; পরিবর্তন হয় পুরোগামী গানের পঞ্চম ও ষষ্ঠ ছত্তের ধাঁচে, অধিকম্ভ 'তৃমি' বঙ্গিত হইয়াছে। মূল কবিতার প্রথম ছত্তই স্বাক্ষর-কবিতার শেষ ছত্ত।

रेकानीत करत्रकृष्टि गांन जानीवाम्खांभक कविका ऋत्भ वाक्तिग्रक मः श्रदश जारह वा সাময়িক পত্রেও প্রকাশিত হইয়াছে। গান হইতে কবিতায় অথবা কবিতা হইতে গানে রূপান্তর, ইহাতে সময়ের বিশেষ ব্যবধান না'ও থাকিতে পারে অথবা সব কয়টি কবিমানসে মূলতই গান এরপ হইতে পারে। তুলনীয় বর্তমান সংকলনে—

তৃতীয় :

বসস্থের দৃতী তুমি, ফান্ধনের কুস্থম-উৎসবে व्यानत्मत मान তব পরিপূর্ণ করি দিবে কবে ? বকুলবীথিকাতলে विश्रतिरव नीनाष्ट्रांन. আকুল কুম্বলগন্ধে বনচ্ছায়া রোমাঞ্চিত হবে। তৃণহিল্লোলিত পথে মঞ্জীরের কল্লোলগুঞ্জন ক্ষণে ক্ষণে ভেঙে দিবে নিকুঞ্জের নিভূত স্থপন। আকাশে তোমার আঁথি क् ज्नास नत जिल्.

ধেয়ানে দেখিতে পাবে দিকে দিকে ক্রদয়বল্পতে।

—ভারতী, চৈত্র ১৩৩২, পু ৪৬৭ २: (न कांबन। ১७७२ আগরতলা হইতে প্রচারিত ত্রৈমাসিক রবি পত্তে (চৈত্র ১০০২, পৃ ৩৮০) 'গান' শিরোনামে ও বিচিত্র পাঠান্তরে ইহারই প্রকাশ : ছত্র ২, 'দান তব' স্থলে : স্থাপাত্র / ছত্র ৩-৪, শেষ পদটি না ধরিলে: বঞ্জুলনিকুঞ্জতলে / সঞ্চরিবে / ছত্র 🖢 : চঞ্চল মঞ্জীরঘাতে মৃথর কল্লোলগুলরণ / ছত্র ৭, 'দিবে নিকুঞ্জের' ছলে : দেবে অরণ্যের / ছত্র ৮-৯ : নর্ম-भन्नत्व शामि / शिक्तानि **উঠি**বে ভामि / तहनाकालित निर्मि : ১৮ই का**य**न ১৬७२।

বিতীয়:

কল্যাণীয়া শ্রীমতী রেবাকে

আশীর্কাদ ফাগুনের নবীন আনন্দে বাণী মোর গাঁথিলাম ছন্দে। পথ হতে নিক্ তুলি পাথীর কাকলীগুলি, ভরা হোক্ বকুলের গন্ধে। চলে যাক্ মিলনের পাস্থ দখিনের বাতাদে অশাস্ত। তারি হাতে হোক্ লেখা পলাশের রাডা রেখা

১৫ [১১।১२ ?] काजुन । ১८७२

শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

٥ د

অনুরূপ আশীর্বচন, স্বাক্ষর ও রচনার তারিথ -সহ ইহার অপর যে পাঠ, তাহাতে বৈকালীর ও গীতবিতানের পাঠের সহিত সাদৃশ্য অধিক। যাহা হউক, উল্লিখিত পাঠের তুলনায় ছত্র ২, 'বাণী মোর' স্থলে: গানথানি / ছত্র ৩: দিলো তারে বনবীথি / ছত্র ৪, 'গুলি' স্থলে: গীতি / ছত্র ৫, 'হোকৃ' স্থলে: হোলো / ছত্র ৬-১০, বর্তমান গ্রন্থের দ্বিতীয় স্তবকের ছত্র ১-৫ -সদৃশ। 'আশীর্কাদ' কবিতার এই দ্বিতীয় পাঠে ধুয়াটির (সব পাঠেরই প্রথম ছত্র) পুনরাবৃত্তি তুইবার; অনুরূপ তুই স্থলে বর্তমান গ্রন্থে শুধু: মধুর বসন্তে॥

স্বভাগিনী, তোমার সীমস্তে।

প্রথম :

বাব্লিকে

ফুট্ল রসের দোলন চাঁপা / হন্দয়আকাশে।
দোল ফাগুনের চাঁদের মতন / স্থায় মাথা দে॥
ইত্যাদি
ইহার দিতীয় পাঠের শিয়রে আছে: আশীর্কাদ / বাব (লিকে / (শ্রীমতী রেবা সরকার।)
প্রথম ছত্ত্রে 'ফুটল রসের' স্থলে: দোলে প্রেমের (বর্তমান গ্রন্থে অফুরূপ) / দ্বিতীয়
ছত্ত্রে 'মতন' স্থলে: আলোয় (বর্তমান গ্রন্থে: আলোর)— ইহা ছাড়া পাঠভেদ নাই।
গ্রন্থের পাঠ গীতবিতানের সদৃশ, প্রথম পদের পুনঃপুনঃ আর্ত্তি 'গায়িক'র অফ্। ২৯

২৯ সংকলনের প্রথম ও বিভীয় গানের তুলনা ব্যাপারে, পুরোগামী পাতুলিপির ভালিকায় ও বিবরণে শুষ্টব্য, সংখ্যা-২।

কোনো কোনো গানের প্রথম ছত্তেই চমৎকারজনক পাঠভেদ ঘটিয়াছে উত্তরকালে। যেমন বর্তমান সংকলনের

- থ্রামার মৃক্তি গানের স্থরে' পরে হয়: আমার মৃক্তি আলোয় আলোয় /
 গীতবিতান প্রইবা। ইহার পরের অংশেও অনেক পরিবর্তন আছে।
- (ভালো লাগার শেষ যে না পাই' পরে হয়: মধুর, ভোমার শেষ যে না পাই / অক্সাক্ত ছত্তে পাঠভেদ নাই।
- ৬৫) বৈকালী-ধৃত 'তব অমূর্ত্ত বাণী

অকে আমার চিত্তে আমার / মূর্ত্তি পেয়েছে জানি।

গীতবিতানে: অরূপ তোমার বাণী

অব্দে আমার চিত্তে আমার / মৃত্তি দিক সে আনি।
পরের ত্ইটি ছত্তে বংসামান্ত আরও পাঠভেদ আছে, পাঠক তুলনা করিয়া
দেখিতে পারিবেন। ব্যালাটন ফুরেডের আরোগ্যভবন হইতে মৃত্তিলাভের
পূর্বেই ইহার যে পূর্বাভাস কবি-মানসে ও লেখনীতে আসে সেটি এখানে
সংকলন করা গেল (প্রথম ছত্তের শব্দগত সাদৃশ্য প্রথম ও শেষ পাঠে)—

૦૦ ૧૬ કેલ્ ૧૦૦ ૧૬ કેલ્ ૧૦૦ ૧૯૪૬ ইতঃপূর্বে বৈকালী-সম্পর্কিত রবীক্র-পাণ্ডলিপির তালিকায় রবীক্রসদনের ১২৭-সংখ্যক রবীক্র-পাণ্ডলিপির বিবরণে বলা হইয়াছে, ১৯৯৫ সনে মহয়া কাব্যে (আখিন ১৯৫৬) সংকলনের উদ্দেশে যথাপূর্ব রূপে অথবা বিচিত্র রূপাস্তরে কোন্ কোন্ রচনা কবি উহাতে লিপিব্দ্ধ করেম। কার্যতঃ সবগুলি মহয়ায় গ্রহণ করা হয় নাই; বেগুলিতে পরিবর্তন করা হইয়াছে, পরিবর্তনের প্রকৃতি ও পরিমাণ একরূপ নহে। মুক্তি কাব্যগ্রাহে, যুগপং বৈকালীতে ও মহয়ায়, যেগুলি আছে, সেগুলির পারস্পরিক তুলনা পাঠক নিজেই করিতে পারিবেন; অহ্য কতকগুলি রচনার রূপাস্তরবৈচিত্র্য এ হলে অমুধাবনের যোগ্য। তি রবীক্র-পাণ্ডলিপি ১২৭ - আধারিত বর্তমান সংকলনের—

30

আমার লতার প্রথম মৃকুল:

আমার প্রাণের জাগরণী দৃতী

চেয়ে আছে মোর পানে,
ভগায় আমারে, "এসেছি এ কোন্থানে?"
এসেছ আমার জীবনলীলার রঙ্গে,
এসেছ আমার তরল ভাবের ভঙ্গে,
এসেছ আমার স্বরতরঙ্গানে
জাগাতে সে কথা যাহা কেহ নাহি জানে॥
আমার প্রাণের জাগরণী দৃতী
প্রভাতআলোকমাঝে
ভগায় আমারে, "এসেছি এ কোন্ কাজে?"
এসেছ টুটতে কাজের জটিল গ্রন্থি,
বিরস চিস্তে অমৃত তুলিতে মন্থি',
বাজাতে বাঁশরী প্রেমাতৃর তুনয়ানে,
মিলাতে তোমারে আমার আয়দানে॥

৩০ ১২৭-সংখ্যক রবীন্দ্র-পাণ্ড্লিপির বিবরণে বর্তমান বৈকালীর ৫, ৭, ৮, ৯, ১০, ২৬, ২৯, ৪৩, ৪৬, ৪৭ ও ৬৪ সংখ্যার নির্দেশ। তন্মধ্যে ৫, ৮, ২৬ ও ৪৩ মছয়া কাব্যে গৃহীত আর ৭ ও ৯ অয়-য়ৃক্ত রচনায় কোনো পরিবর্তন হয় নাই। স্বতর্ত্ত আলোচনার বিষয়— '১০', '৪৬', '৪৭', '৬৪' ও বিশেষভাবে '২৯'।

এটা ভূমিকার [মন্ত্রা'র] বেতে পারে / কবি-কর্তৃক এই মস্ভব্য লেখার পরেও আছম্ভ রচনা বর্জনচিহ্নে লাঞ্চিত। রূপান্তর: ২৫ শ্রাবণ ১৩০৫

89

কার চোথের চাওয়ার:

চোখের চাওয়ার হাওয়ার দোলায় মন !
তাই কি হৃদয় বিকল সকল খন ?
তাই হাসি তোর অশ্রেধারায় ধোওয়া,
ভাবনা কি তাই মৌনছায়ায় ছোঁওয়া ?
ভাষায় কি তাই রাগিণীর আবরণ ?
কেমন বিকল আছিস সকল খন ।

পরশমণির পরশে পরাণ জাগা, তাই তো তোমার স্বপ্ন সোনায় লাগা। দিনের প্রবাহে প্রহরলহরীতলে

ঝিলিমিলি করি স্বর্ণঝলক ঝলে

কালোয় আলোয় কাঁপায় আথির কোণ, কেমন বিকল আছিস সকল থন॥

ছন্দের প্রকৃতিগত পরিবর্তন লক্ষণীয়। নৃতন ছন্দে মাত্রাপ্রণের জক্তও বছ পরিবর্তন। পাঙ্লিপি-পর্যালোচনায় ধারণা হয় যে, রচনা : ২৭—২৮ শ্রাবণ ১৩৩৫। অর্থাৎ, ২৭ বা ২৮ যে কোনো তারিখে।

89

রয় যে কাঙাল শৃন্য হাতে:

নিংস্ব যে রয় শৃক্ত পাত্রে
দিন্নের শেষে
সেই দেখা দেয় নিলীপ রাত্রে
রাজার বেশে।
দিবসে মান সে রাজপথে তারে
মৌন দেখি,
তিমিরজ্ঞাসনে চক্ষুতে তার
দীপ্তি একি!
পুস্পাম্কুট কে পরায়ে দেয়
তাহার কেশে।

দিনে তার কাজে স্থর ছিল না বে
তাই তো হেলা,
বিজয়মন্ত্র বাজায় তন্ত্রী
রাতের বেলা।
তন্ত্রাবিহীন অন্ধকারের
বিপুল গানে
মন্ত্রিয়া উঠে গৌরববাণী
তাহার প্রাণে,
তারার আলোয় কে তাহারে ছোঁয়
বক্ষে এসে॥

[२१--- २৮ खावन २००६]

ছন্দোভেদ ইহাতেও লক্ষ্য করিতে হইবে; অনেক পাঠভেদের কারণ তাহাই। পাঙুলিপিতে, পূর্ব সংকলিত রচনার অব্যবহিত পরে ইহার স্থান। ছ্টিতেই উত্তর-বৈকালী -খৃত মূল রচনার স্থান-কাল দেওয়া থাকিলেও, পরিবর্তনের কাল ২৭—২৮ শ্রাবণ ইহাতে সন্দেহ নাই।

পরবর্তী সংকলন বিধাভিন্ন; আলোচ্য পাণ্ড্রিপিতে প্রথমটি লাঞ্চিত এবং বিতীয়টি 'গ্রাছ' পাঠ— কেননা, বর্জনচিহ্ন নাই।

હે8

পাছ পাৰীর রিক্ত কুলায়:

পাস্থ পাথীর রিক্ত কুলার
কান পেতে রয় ডালে
পলাতকার পথের পানে
পাতার অস্তরালে।
বাসায় ফেরা ডানার শব্দ
নিংশেষে সব হল শুরু,
সন্ধ্যাতারার মন্ত্র উঠে
দিনের বিদায়কালে।

ইত্যাদি

ছিতীয় গুবকে পরিবর্তন নাই, কোনো গুবকেই 'ধুয়া' লেখা হয় নাই, শেষ ছত্র : বেণুশাখার তালে ॥ / পরিবর্তিত পাঠের রচনা মনে হয় : ২৬—২৭ অগস্ট্১৯২৮ বা ১০—১১ ভাদ্র ১০০৫ । স্বটা বর্জনচিহ্নিত ।

গ্রাহ্ম পাঠ

পাছ পাৰীর রিক্ত কুলায় আমি
কান পেতে রই ভালে।
সকালবেলায় নিল সে বিদায় সাগরতীর্থগামী
গিরির অন্তরালে।
ঘর-ফেরা যত ভানার শব্দ গুণি,
শেষ হয়ে যায়, আর কিছু নাহি শুনি;
সন্ধ্যাতারার মন্ত্রজপের সময় ঘনায়ে এল
দিনের বিদায়কালে॥
চক্রমা দিল রোমাঞ্চে চঞ্চলি'
তরঙ্গ সিন্ধুর।
বনচ্ছায়ার রদ্ধে রক্ত্রে মাণিক্য পড়ে গলি'
জ্যোৎসার বিন্দুর।
স্থিবিহীন অসীম শ্রুতা যে
সকল প্রহর হুহুক্কারিয়া বাজে
বক্ষে আমার; বৈরাগী এই রাতের হাওয়ার স্থুরে

লক্ষণীয় এই ষে, ছন্দোভেদ ঘটিয়াছে, কতকগুলি ছত্তে মাত্রাসংখ্যা বাড়াইয়া স্তবকের ছাঁদও বদল করা হইয়াছে। এই পরিবর্তিত রচনার কাল ২৭ অগস্ট্ বা ১১ ভাদ্রের পরে কিন্তু ৭ কার্তিক ১৩৩৪ তারিখের পূর্বে। অর্থাৎ, ১১ ভাদ্র—৭ কার্তিক ১৩৩৪। এই গীতিকবিতার স্বশেষ পদ, এ সম্পর্কে ২৬-সংখ্যক পাদটীকা বিশেষ স্তইবা।

পল্লবকলতালে ॥

পরবর্তী আলোচনা যে কবিতা বা গান লইয়া, তাহার উদ্ভবের ও ক্রমপরিণতির ইতিহাস বিচিত্র। দ্বিতীয়, বিশেষতঃ তৃতীয় স্থচীপত্রে (পৃ 19 ও 143 / পারম্পর্যে ১০ ও ৪৭), যেমন ইহার উল্লেখ, তেমনি ত্রয়োদশ ও ত্রয়োবিংশ টীকায় ইহার বিষয় বলা হইয়াছে। ২৭-সংখ্যক রবীক্রপাণুলিপির '19' পৃষ্ঠার পাঠ উদ্ধার করা যায় নাই তবে এটুকুই অন্থমান করা চলে যে, এই পাঠ 'প্রবাসী'-পাণুলিপির অন্থরপ (বর্তমান গ্রন্থে '২৯' সংখ্যায় সেই পাঠই দেখা যায়), পক্ষাস্তরে ইহার বীজরপ কী ছিল এবং পরে পরে কী পরিবর্তন হইল স্থম্পাষ্ট রবীক্রলেখাক্ষনে বিশ্বত। যথা—

ে) স্বাক্র-কবিতায় পূর্বাভাস

महाराह मीला भारत हाराहुः॥ महाराह सीला काराह हाराहुः महाराह सीला भारतह स्वाराहे

८००० हिन् अस्ति । स्त्री प्रमाणकार्यः । अस्ति । स्त्री प्रमाणकार्यः ।

—শ্রীমতী লীলা মজুমদারের স্বাক্ষরসংগ্রহ

- খ) রবীন্দ্র-পাণ্ড্লিপি ২৭, পৃ 19-ধৃত রূপ। পাঠোদ্ধার হয় নাই। রচনা ১২ চৈত্র ১৩৩২ তারিখের আগে অথবা ওই দিবসে।
- গ) 'প্রবাদী'-পাণ্ডুলিপি তথা বর্তমান গ্রন্থ -ধৃত রূপ। ২৯ বৈশাথ ১৩৩৩ তারিথে বা অব্যবহিত পূর্বে প্রবাদী-সম্পাদকের উদ্দেশে প্রেরিত। এই পাঠ পূর্বোক্ত প্রচন্থর বা অবলুগু পাঠের প্রতিরূপ না হইলেও অন্তর্গ হইতে পারে।

- त्रवीख-भाकृतिभि २१, भृ 143

अपूरु त्यार त रीम अक्षाद्व अभागः॥

मुलाल् जार अवन त्यत्म अन्तर त्यत्मण,

'145' পৃষ্ঠা -ধৃত লাঞ্ছিত এবং সম্ভবতঃ বজিত / অপ্রকাশিত ইংরেজি রূপান্তরের রচনা : ১৭ জুলাই ১৯২৬ বা ১ শ্রাবণ ১৩৩০। বাংলা রচনা যে ওই দিনে বা উহার অব্যবহিত পূর্বে তাহা অমুমান করা চলে।

ঙ) প্রচল গীতরূপ

আঁধারের লীলা আকাশে আলোকলেথায় লেথায় ছন্দের লীলা অচল কঠিন মৃদক্ষে। অরপের লীলা অগোণা রূপের রেথায় রেথায়,

স্তব্ধ অতল খেলিছে তরল তরকে।

আপনারে পাওয়া আপনা-ত্যাগের গভীর লীলায়, মৃর্জির লীলা মূর্জিবিহীন কঠোর শিলায়

শাস্ত শিবের লীলা ষে প্রলয়জ্ঞভঙ্গে ॥ শৈলের লীলা নির্ঝরকলকলিত রোলে, শুভের লীলা কত না রঙ্গে বিরঙ্গে। মাটির লীলা ষে শস্তের বায়ু-হেলিত দোলে,

আকাশের লীলা উধাও ডানার বিহঙ্গে। স্বর্গের থেলা মর্ত্তোর মান ধ্লায় হেলায়।

তুংথেরে লয়ে আনন্দ খেলে দোলন-খেলায়, শৌর্য্যের খেলা ভীকু মাধুরীর আসকে॥

-- রবীন্দ্রপাণ্ডলিপি ১২৭, পু 57

22

রচন। ৭—১০ ভাদ্র ১০০৫ তারিথে, কেননা এই থসড়া-পাণ্ডুলিপিতে পূর্ববর্তী রচনায় তারিথ ২০ অগস্ট্ ১৯২৮ বা ৭ ভাদ্র এবং পরবর্তী রচনার তারিথ : ২৬ অগস্ট্ ১৯২৮ বা ১০ ভাদ্র ১০০৫। মূলতঃ মহুয়া কাব্যে সংকলনের উদ্দেশে রচিত মনে হয়। গীতবিতান-ধৃত প্রচল গীতরপে একটি মাত্র পাঠপরিবর্তন চতুর্থ ছত্তে, 'খেলিছে' স্থলে : খেলায় / একাদশ ছত্ত্রে একটি পাঠপ্রমাদ-জনিত মূদ্রণপ্রমাদও সম্ভবতঃ আছে—'ডানার' স্থলে : ভাষার / তাৎপর্যের দিক দিয়া অনাহূত বা অবাঞ্চিত মনে হয়।

পাঠবৈচিত্র্যের সংকলন শেষ করা গেল। কৌতৃহলী তথা কাব্যজিজ্ঞান্থ পাঠক বর্তমান গ্রন্থ, গীতবিতান, মহুয়া, প্রাসন্ধিক অক্সান্থ নাটক / কাব্য মিলাইয়া দেখিলে আরও অনেক পাঠভেদ দেখিতে পাইবেন। নিজের লেখা নিজে নকল করিতে গিয়াও কবি পাঠ বদল করেন নাই, এ দৃষ্টাস্ত বিরল হইতে পারে। 'এই পাঠ অথবা এই ছত্র ভালো' 'এটি ভালো নয়', আশু এরপ সিদ্ধাস্তের লোভ সংবরণ করিলে হয়তো দেখা

ষাইবে— বিভিন্ন পাঠের প্রয়োগ বা প্রয়োজন বিচিত্র আর বিশেষ উপযোগিতাও অবশ্রুই রহিয়াছে।

॥ সংকলন-স্ত্র। বর্তমান সংকলনের অর্থাৎ অথগু বৈকালীর ক্রমিক অন্ধ -অন্থ্যায়ী—
১-১৯, ২১-৪০ 'প্রবাসী'-পাগুলিপি হইতে।
২০, ৪০ (শেষ-ন্তবক) - ৪৮, ৫১-৬৪ গুড৬ পূর্বমূদ্রিত বৈকালী হইতে
যাহার মূলাধার 'এল্যুমিনিয়মের পাতে' কবির হাতের লেখা।
৬৫, ৬৭, ৬৮ ও গ্রন্থপরিচয়-ধৃত ৬৫'র পূর্বাভাস যে আদর্শ হইতে
সেগুলি রহিয়াছে মহলানবিশ-সংগ্রহে।
৪৯ ও ৫০, ব্যবহারযোগ্য অন্ত রবীক্রপাগুলিপির অসম্ভাবে, ১৩১৪
বৈশাথে মাসিক বস্ক্ষতী পত্রে মুক্তিত লিপিচিত্র হইতে ঈষৎ
বর্ধিতাকারে গৃহীত।

দর্বশেষ তুইটি গান (৬৭ ও ৬৮) ধাতৃপত্রে লেখা উত্তর-বৈকালীতে আদৌ না থাকিলেও, স্বাধিকারে উহাতে তাহাদের স্থান ও মর্যাদা সম্পর্কে সংশয়ের অবকাশ নাই। কেননা, বৈকালী-রচনাপর্বের সহিত ওই ছটি গান অঙ্গাঙ্গীভাবে যুক্ত এবং সংগীতে বেমন সম বা শম, দর্বশেষ গানে তেমনি সমুদায় বৈকালীর অভীষ্ট পরিণাম বা স্কংগত সমাপ্তি।

। স্বীকৃতি। সম্পূর্ণ 'প্রবাসী'-পাণ্ডুলিপি পাওয়া গিয়াছে ও ব্যবহারের স্থযোগ হইয়াছে শ্রীমতী শাস্তা নাগের সৌজতো।

> বৈকালীর বহু গানের প্রতিচিত্রণ শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশের সৌঙ্গল্যে সন্তবপর হইয়াছে।

> বহু গানের রচনাকাল জানিবার স্থযোগ দেন শ্রন্থের অনাদিকুমার দন্তিদার।
> 'নটীর পূজা'র রবীক্রপাণ্ডলিপি দেখিবার স্থযোগ দেন শ্রীসস্তোষকুমার ভঞ্জ ও
> শ্রীমতী গৌরীদেবী।

গ্রন্থসম্পাদনায় বহু তথ্যের সন্ধান দিয়াছেন শ্রীপুলিনবিহারী সেন এবং শ্রীশোভনলাল গলেপাধ্যায়।

সম্পাদনা ও গ্রন্থপরিচয়-রচনা : শ্রীকানাই সামস্ত

বর্ণামুক্রমিক সূচীপত্র

সূচনা	সংখ্যা	ત્રું કો
অনস্তের বাণী তুমি	•	৩
অনেক কথা যাও ষে ব'লে	> %	74
আকাশ, তোমায় কোন্ রূপে মন	68	%
আকাশে তোর তেম্নি আছে ছুটি	৬১	90
আজি এই মম সকল ব্যাকুল	80	¢ 8
আঁধারের লীলা আকাশে আলোক-লেথায়	[٦]	>><
আঁধারের লীলা আকাশে আলোক লেখায় লেখায়	[२৯]	270
র্ত্তাধারের লীলা আকাশে আলোকলেথায় লেথায়	२३	৩২
আঁধারের লীলা আলোর রঙ্গ বিরক্তে	[२३]	225
আধেক ঘুমে নয়ন চুমে	22	₹¢
আপন গানের টানে, আমার	« 9	৬ ৯
আপনহারা মাতোয়ার।	82	69
আপনারে দিয়ে রচিলি রে কি এ	७€	৩৮
আপ্নি আমার কোন্খানে	¢ b	90
আমার প্রাণে গভীর গোপন	٥٥	ଓଞ
আমার প্রাণের জাগরণী দৃতী	[>•]	304
আমার মৃক্তি গানের স্থরে	42	৬৪
আমার লতার প্রথম মৃকুল	>•	>2
এ পথে আমি যে গেছি বার বার	20	રહ
এবার এল সময় রে ভোর	\$ 5	२১
এসো আমার ঘরে	२৮	৩১
এসো এসো প্রাণের উৎসবে	[60]	> 8
ওগো জলের রাণী	₹•	२२
ওগো স্থন্দর, একদা কী জানি	69	95
কাঁদার সময় অল্প ওরে	ે ર	28
কার চোথের চাওয়ার	85	eb
কী পাই নি তারি হিসাব মিলাতে	78	১৬

কী মূল বরিল বিপূল অন্ধকারে	>	22
কেন রে এতই দাবার দরা	>>	30
কোখা বাবে দে কি জানা নেই	[<0]	> 8
কোখায় ফিরিস পরম শেষের অস্বেষণে	% •	92
ক্ষত ষত ক্ষতি ষত	৬৭	ر. ھه
চপল তব নবীন আঁখি ছটি	e	\u00e4
চাহিয়া দেখো রদের স্রোতে স্রোতে	• •	৬৭
চোথের চাওয়ার হাওয়ায় দোলায় মন	[8%]	۷۰۵
ছুটির বাঁশি বাজ্ল যে ঐ	86-	&.
জানি, তোমার অজানা নাহি গো	ь	١.
তপস্বিনী হে ধরণী, ওই যে তাপের বেলা আদে	₹¢	২৮
তব অমূৰ্ত্ত বাণী	હ €	9 9
তুমি উবার সোনার বিন্দু	45	৬৮
ভূমি কি এসেছ মোর খারে	৩৬	೯೮
তোমার অরূপ বাণী	[৬৫]	١٠٩
ভোমার বীণা আমার মনোমাঝে	8	8
ভোর ভিতরে জাগিয়া কে যে		৬২
দিন পরে যায় দিন	₹8	29
দিনের বেলায় বাঁশি তোমার	& 0	9@
দে পড়ে দে আমায় তোরা	59	52
দোলে প্রেমের দোলন চাঁপ।	2	>
নাই, নাই ভয়, হবে, হবে জয়	« >	৬৩
निमीर्थ की करत्र राज मरन	٥.	৩৩
নিঃস্ব বে রয় শৃক্ত পাত্তে	[89]	۵۰۵
পুর বেজে যায় রিনিরিনি	•	ь
াথ এখনো শেষ হল ন।	७२	98
পথে বেতে ভেকেছিলে মোরে	৩৪	৩৭
ারবাসী চলে এসো ঘরে -	৩৯ ′	82
পরবাসী চলে এসে। ঘরে	[ده]	>.9
পাতার ভেলা ভাদাই নীরে	74	২ ۰
পান্থ পাথীর রিক্ত কুলায় আমি	[७৪]	>>>

পাছপাৰীর রিক্ত কুলায় কান পেতে রয় ভালে	[*8]	>>•
পাস্থপাৰীর রিক্ত কুলায় / গছন গোপন ভালে	48	76
कांश्रत्वत्र नदीन चानत्म / शानशानि	2	2
का अत्वत नवीन ज्यानत्म / वांगी स्थात	[*]	>-#
कृष्ट्रेन तरमत्र रमानन हैं। भी	[>]	>••
বনে যদি ফুটল কুক্ম	29	9.
বসস্তের দৃতী তুমি	[•]	>•¢
বাঁধন-ছেঁড়ার সাধন হবে	৩৩	૯৬
বাঁশি আমি বাজাই নি কি	৬৬	16
বাঁশি যথন থামবে ঘরে	8 •	8 €
বিনা সাজে সাজি দেগা দিয়েছিলে কবে	>a	54
বিরস দিন, বিরল কাজ	২৬	२३
ভালো লাগার শেষ যে না পাই	4 8	৬৬
মরণসাগরপারে তোমরা অমর	৩৮	8 >
মাঘের বিদায়ক্ষণে	85	8.5
যা পেয়েছি প্রথম দিনে	৬৮	b •
রয় যে কাঙাল শৃ্ত্য হাতে	8 9	63
লিখন তোমার ধ্লায় হয়েছে ধূলি	٩	>
শেষ বেলাকার শেষের গানে	٤٥	₹8
সকাল বেলার আলোয় বাজে	()	৬৫
দে কোন্ পাগল যায় পথে তোর	8 ¢	49
সেই ভালো সেই ভালো	>6	39
হার মানালে ভাঙিলে অভিমান	७२	96
হে চির-নৃতন আজি এ দিনের	৩৭	8 •
হে মহাজীবন, হে মহামরণ	88	65

গ্ৰন্থপরিচন-ধৃত গীতিক্বিতার পৃথক্ ক্রমিক সংখ্যা নাই বন্ধনীবন্ধ সংখ্যায় পূর্বপাঠের নির্দেশ

বিশ্বভারতী গ্রন্থনবিভাগের পঞ্চাশংবর্ধ-পূর্তি উপলক্ষে প্রকাশ : ৩২ আষাঢ় ১৩৮১ : ১৭ জুলাই ১৯৭৪

© বিশ্বভারতী ১৯৭৪

প্রকাশক রণজিৎ রায় বিশ্বভারতী। ১০ প্রিটোরিয়া স্ক্রীট। কলিকাডা ১৬

মূক্রক শ্রীস্থর্যনারায়ণ ভট্টাচার্য তাপদী প্রেদ। ৩০ বিধান দরণী। কলিকাতা ৬